हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार 5 जुलाई 2026

11 मानसून ने खोली विकास के दावों की पोल : प्रदीप

12 हनुमान ढाणी में तीन महीनों से पानी का टोटा

खबर संक्षेप

महिला आयोग सदस्य ने किया निरीक्षण

चरखी दादरी। हरियाणा राज्य महिला आयोग की सदस्य सुनीता लोहचब ने चरखी दादरी वन स्टॉप सेंटर का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने महिलाओं को उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं और सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि महिलाओं का सम्मान, स्वाभिमान और सुरक्षा सुनिश्चित करना महिला आयोग की सर्वोच्च प्राथमिकता है। वन स्टॉप सेंटर में उन्होंने महिलाओं को दी जा रही कानूनी सहायता, परामर्श और सेवाओं की समीक्षा की।

मोटर के तार चोरी करने का आरोपी गिरफ्तार

बवानीखेड़ा। थाना बवानी खेड़ा पुलिस ने खेत से मोटर के तार चोरी करने के मामले में तीसरे आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। प्रीतम निवासी जाटू लोहारी ने थाना बवानी खेड़ा में खेत से मोटर और तार चोरी होने की शिकायत दर्ज करवाई थी। जांच के दौरान मुख्य सिपाही सुनील कुमार ने इस अभियोग में तीसरे आरोपी को न्यायालय से प्रोडक्शन वारंट पर गिरफ्तार किया। गिरफ्तार आरोपी की पहचान अजय पुत्र सुनील, निवासी वार्ड नंबर 5, बवानी खेड़ा के रूप में हुई।

सरेआम सट्टा खाईवाली करते आरोपी गिरफ्तार

भिवानी। पुलिस की सीआईए स्टाफ प्रथम टीम ने सरेआम सट्टा खाईवाली कर रहे आरोपी को गिरफ्तार किया है। उप निरीक्षक अजय कुमार अपनी टीम के साथ दादरी गेट क्षेत्र में गश्त पर थे। इसी दौरान मिली गुप्त सूचना के आधार पर बंसीलाल पार्क के सामने पानी की टंकी के पास छापेमारी की गई। पुलिस ने मौके से दीवान चंद उर्फ दीवान, निवासी हाल्लू मोहल्ला, भिवानी को रंगे हाथ पकड़ लिया। आरोपी के कब्जे से सट्टा पर्ची और 13,160 रुपये नकद बरामद किए गए। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

सीबीएलयू में ओपन काउंसलिंग कल

भिवानी। चौधरी बंसी लाल विवि में स्नातक पाठ्यक्रमों की रिक्त सीटों पर प्रवेश के लिए 6 जुलाई को विश्वविद्यालय परिसर में ओपन काउंसलिंग आयोजित होगी। एडमिशन कॉर्डिनेटर प्रो. सुरेंद्र कौशिक ने बताया कि इच्छुक अभ्यर्थी सुबह 9 बजे संबंधित विभाग में सभी मूल प्रमाण पत्र, सत्यापित प्रतियां और निर्धारित शुल्क के साथ उपस्थित हों। विस्तृत जानकारी विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट और प्रवेश पोर्टल पर उपलब्ध है। प्रवेश सहायता केंद्रों पर कर्मचारियों और स्वयंसेवकों द्वारा अभ्यर्थियों को आवश्यक मार्गदर्शन भी प्रदान किया जा रहा है।

सेना भर्ती रैली जुलाई के मध्य में होने की संभावना

भिवानी/ बाढ़ड़ा। सेना भर्ती कार्यालय के प्रवक्ता ने बताया कि भर्ती वर्ष 2027 के लिए सेना में भर्ती हेतु आयोजित ऑनलाइन कॉमन एंट्रेंस एग्जाम (सीईई) में शामिल हुए अभ्यर्थियों के लिए महत्वपूर्ण सूचना जारी की गई है। प्रवक्ता के अनुसार, सीईई परीक्षा का परिणाम घोषित होने के बाद जोनल भर्ती कार्यालय अंबाला के अंतर्गत वर्ष की पहली सेना भर्ती रैली का आयोजन सेना भर्ती कार्यालय रोहतक द्वारा किया जाएगा। यह भर्ती रैली संभावित रूप से जुलाई माह के मध्य में राजीव गांधी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, रोहतक में आयोजित होगी।

कड़ी सुरक्षा के बीच एचटेट परीक्षा का आयोजन, चप्पे-चप्पे पर तैनात रहा पुलिस बल

भिवानी में 4090 में से 552 रहे अनुपस्थित, 3538 ने दी परीक्षा, दादरी में 303 परीक्षार्थी गैर हाजिर रहे

महिलाओं के बालों से चिमटी, रबर हटवाए, पुरुष भावी टीचरों की बेल्ट, इलेक्ट्रॉनिक गैजेट बाहर रखवाए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी/चरखीदादरी

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित अध्यापक पात्रता परीक्षा-लेवल -3 की परीक्षा को लेकर जबरदस्त सुरक्षा व्यवस्था रही। परीक्षा केंद्रों के आसपास पुलिस का जबरदस्त पहरा रहा। परीक्षा के दौरान महिला परीक्षार्थियों के बालों से चिमटी व रबर आदि भी निकलवा कर बाहर रखवा दिए। वहीं पुरुष परीक्षार्थियों को बेल्ट, प्रस, इल्कट्रॉनिक गैजेट आदि बाहर रखवा दिए। परीक्षार्थियों के रोलनम्बर व आईडी जांचने के बाद ही उनको परीक्षा केंद्र के अंदर प्रवेश मिला। परीक्षा केंद्र में बायोमेटीक मशीन से अंगूठे का मिलान करवाया गया, हस्ताक्षर करवाए गए। इन सब कार्यों की वीडियोग्राफी तथा सीसीटीवी कैमरों की नजर तले हुए। इस पूरी प्रक्रिया से गुजरने में परीक्षार्थी को करीब आधे घंटे का वक्त लगा। सारी प्रक्रिया पूरी होने के बाद ही परीक्षार्थी को परीक्षा केंद्र में प्रवेश मिला।

जिले में 21 परीक्षा केंद्रों पर 12,653 परीक्षार्थी एचटेट की परीक्षा दे रहे हैं, इनमें 9,151 महिला एवं 3,502 पुरुष अभ्यर्थी शामिल हैं। चार जुलाई (लेवल-3 पीजीटी) को 13 केंद्रों पर 4,090 अभ्यर्थियों के लिए व्यवस्था रही, जिनमें से 552 अनुपस्थित रहे। वहीं चरखीदादरी जिले में 2125 परीक्षार्थियों को परीक्षा देनी थी लेकिन इनमें से 303 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे और 1822 ने परीक्षा दी।

भिवानी। हरियाणा अध्यापक पात्रता परीक्षा के दौरान परीक्षा केंद्र के बाहर लगी सूची पर अपना रोलनम्बर ढूंढते हुए। फोटो : हरिभूमि

परीक्षार्थियों के वाहनों की वजह से जाम की स्थिति बनी

भिवानी शहर स्थित सभी परीक्षा केंद्रों पर 12 बजकर 50 मिनट पर परीक्षार्थियों के लिए परीक्षा केंद्र के भवन का प्रवेश द्वार खोला गया। गेट के बाहर परीक्षार्थियों के रोलनम्बर की सीटिंग प्लान लगी हुई थी। गेट के बाहर भीड़ न लगे। इसके लिए पुलिस ने परीक्षार्थियों की लाइनें बनवाई। लाइनों में लगने के बाद परीक्षार्थियों के रोलनम्बर व अन्य पहचान पत्र की जांच शुरू हुई। पुलिस व जांच एजेंसियों की जांच पूरी होने के बाद ही परीक्षार्थियों को आगे जाने दिया। मुख्यगेट के भीतर महिला परीक्षार्थियों के बालों में लगी चिमटी व रबर हटवाया। वहीं पुरुष परीक्षार्थियों की पेंट की बेल्ट व मोबाइल आदि बाहर ही रखवा दिए। इसके बाद बायोमेटीक मशीन पर अंगूठा लगवाने का कार्य शुरू हुआ। उसके बाद ही परीक्षार्थी परीक्षा केंद्र के भवन तक पहुंच पाया। इस दौरान चप्पे चप्पे पर पुलिस बल तैनात रहे। शहर में बने परीक्षा केंद्रों पर बाहरी जिलों व जिले के दूर दराज के इलाकों से आने वाले परीक्षार्थियों के निजी वाहनों की वजह से सड़कों पर जाम की स्थिति बनी लेकिन यातायात पुलिस की मुस्तैदी के चलते यातायात व्यवस्था पटरी पर रही। कई बार जाम की स्थिति बनी और कुछ देर बाद वाहनों का आवागमन भी शुरू हो गया। शाम को जब परीक्षा का समापन हुआ तब परीक्षार्थियों में गंतव्य पर जल्दी पहुंचने को लेकर खूब आपाधापी मची। निजी वाहनों की वजह से सड़कों पर लम्बी लाइनें लगने लगी।

परीक्षा केंद्र का रास्ता भटके 40 परीक्षार्थियों को पुलिस ने पहुंचाया निर्धारित सेंटर तक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

एचटेट 2026 की परीक्षा शनिवार को पहले दिन शांतिपूर्वक ढंग से संपन्न हुई। डीसी साहिल गुप्ता द्वारा सौंपी गई जिम्मेदारी के अनुरूप परीक्षा के ऑल ओवर इंचार्ज एडीसी दीपक बाबू लाल करवा व परीक्षा केंद्रों के नोडल अधिकारी एडीएम महेश कुमार और डीएमसी हरबीर सिंह ने पूरा दिन मोर्चा संभाला और शिक्षा बोर्ड में सभी जिलों में आयोजित हो रही परीक्षा केंद्रों के मॉनीटरिंग के लिए कंट्रोल रूम स्थापित किया गया, जहां पर सीसीटीवी कैमरों से परीक्षा केंद्रों की स्थिति की हर पल जानकारी ली गई। वहीं दूसरी ओर हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन एडवोकेट शंकर लाल धूपड़ ने कंट्रोल रूम सहित विभिन्न परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण किया।

पुलिस ने की परीक्षार्थियों की मदद

परीक्षा के दौरान कई परीक्षार्थी अपने-अपने परीक्षा केंद्रों का रास्ता भटक गए, इनमें से अधिकांश परीक्षार्थी चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय में स्थापित तथा वैश्य मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में स्थापित परीक्षा केदों में परीक्षा देने वाले परीक्षार्थी शामिल रहे। कंट्रोल रूम के इंचार्ज पुलिस निरीक्षक सत्यनारायण ने बताया कि 10 से 12 परीक्षार्थी वैश्य कॉलेज पर पहुंच गए वहीं करीब 30 परीक्षार्थी चौधरी बंसीलाल विवि के पुराने कैंपस में पहुंचे। वहां पर भटक रहे इन परीक्षार्थियों को पुलिस ने अपनी स्कॉर्पियो और राइडर की मदद से उनके निर्धारित परीक्षा केंद्रों तक पहुंचाने का काम किया। इसी प्रकार से कुछ परीक्षार्थियों को हलवासिया सीनियर सेकेंडरी स्कूल में भी पहुंचाने का काम किया। वहीं पुलिस ने कुछ परीक्षार्थी को दिल्ली वर्ल्ड पब्लिक स्कूल और लिटिल हाट्र्स पब्लिक स्कूल में पहुंचाया।

ट्रैफिक पुलिस भी मुस्तैद दिखी

चरखीदादरी/ भिवानी। हरियाणा अध्यापक पात्रता परीक्षा को लेकर नेशनल हाईवे व अन्य मुख्यमार्गों पर यातायात व्यवस्था बनाए रखने के लिए ट्रैफिक पुलिस भी मुस्तैद नजर आई। एसडीएम डॉ. विरेंद्र सिंह, डीएसपी कप्तान सिंह सहित अन्य अधिकारियों द्वारा भी परीक्षा केंद्रों का दौरा कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया जा रहा था। इधर भिवानी में भी यातायात पुलिस की मुस्तैदी के चलते यातायात व्यवस्था पटरी पर रही।

परीक्षार्थियों ने प्रश्न-पत्र पर उठाए सवाल

चरखी दादरी। एचटेट लेवल-3 की परीक्षा देकर बाहर आए परीक्षार्थियों ने प्रश्न-पत्र पर सवाल उठाए। परीक्षार्थी अभिषेक, हेमंत, नवीन शर्मा आदि ने बताया कि कई प्रश्नों के हिंदी और अंग्रेजी भाग में अंतर था। वहीं वाणिज्य संकाय के प्रश्न पत्र में प्रश्न संख्या 90 के बाद सीधी 96 संख्या थी। जबकि 91 से 95 संख्या के प्रश्न आखिरी पेज पर थे। ऐसे में ओएमआर शीट में गलती होने का अंदेशा बना रहा। परीक्षार्थियों ने ग्रेस अंक देने की मांग रखी।

गुरु-शिष्य सम्मान समारोह 26 को मेधावी छात्र व शिक्षक होंगे सम्मानित

भिवानी। गुरु-शिष्य की पावन परंपरा को नमन करने और शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिए 26 जुलाई को भिवानी में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन होने जा रहा है। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर आयोजित होने वाले इस गुरु-शिष्य सम्मान समारोह 2025-26 में जिले भर के चयनित शिक्षकों और मेधावी विद्यार्थियों को मंच पर सम्मानित किया जाएगा। यह सामाजिक पहल पराक्रमी योद्धा फाउंडेशन (प्रस्तावित) द्वारा की जाएगी। यह कार्यक्रम 26 जुलाई को सुबह 9:30 बजे से दोपहर 12 बजे तक स्थानीय पंचायत भवन में आयोजित होगा। कार्यक्रम की खास बात यह है कि पराक्रमी योद्धा फाउंडेशन के संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक विजेन्द्र वर्मा विशेष रूप से इस समारोह में शामिल होने के लिए भिवानी पहुंचेंगे। वर्मा भारत सरकार के एक उच्चाधिकारी हैं और वर्तमान में अपनी सरकारी सेवाओं के चलते भिवानी से बाहर कार्यरत हैं।

तहसीलदार और नप अधिकारियों ने लिया नालों की सफाई व्यवस्था का जायजा

भिवानी। मानसून के मद्देनजर बरसाती पानी निकासी को लेकर एसडीएम महेश कुमार के निर्देशानुसार तहसीलदार जयबीर सिंह और नगर परिषद अधिकारियों ने शहर में नगर परिषद के अधीन आने वाले नालों की सफाई कार्य का निरीक्षण किया। उल्लेखनीय है कि बारिश के मौसम के मद्देनजर डीसी साहिल गुप्ता द्वारा अलग-अलग अधिकारियों को अलग-अलग क्षेत्र में नालों की सफाई व्यवस्था का निरीक्षण करने की जिम्मेदारी सौंप गई है। इसी के चलते एसडीएम महेश कुमार ने तहसीलदार जयबीर सिंह और नगर परिषद अधिकारियों को नगर परिषद के अधीन आने वाले नालों की सफाई व्यवस्था का जायज है लेने के निर्देश दिए। एसडीएम के निर्देशानुसार तहसीलदार जयबीर सिंह, ईओ राजाराम और सफाई निरीक्षक विकास देसवाल ने शनिवार शहर में हनुमान गेट, हालवास रोड ढाना रोड,जैन चौक,रोहतक गेट से दादरी गेट, दिनोद गेट चौकी के पास व कृष्णा कॉलोनी क्षेत्र में नालों की सफाई व्यवस्था का जायजा लिया।

पत्थरों से भरा डंपर चढ़ते ही पुल धराशायी

निगाना नहर पर बना पुल टूटा, राहगीर परेशान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| तोशाम

जुई रोड से धारण की जाने वाले मार्ग पर स्थित निगानां नहर पर बना पुल शनिवार सायं पत्थरों से भरा हुआ डंपर चढ़ते ही टूट गया। जिसके कारण डंपर नहर में ही धंस गया। डंपर नहर में धंसने से रास्ता पूरी तरह अवरूद्ध हो गया। जिसके कारण राहगीरों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा।

हर रोज की तरह शनिवार को भी जुई मार्ग से धारण की जाने वाले मार्ग से डंपर खरकड़ी सौहान की पाड़ियों से पत्थर लाते थे।

शनिवार सायं जब पत्थरों से भरा डंपर पुल को पार करने लगा तो पुल धंस गया और डंपर का पिछला हिस्सा नहर में ही धंस गया।

डंपर नहर में धंसने से रास्ता पूरी तरह अवरूद्ध हो गया। जिसके कारण राहगीरों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा।इस बारे में सिंचाई विभाग के एसडीओ अंकित ने बताया कि पुल काफी समय से डैमेज था। भारी वाहनों की आवाजाही के लिए बोर्ड पर भी लगाया था। जिसको को उखाड़ ले गया। अब नया पुल बनाने के लिए मंजूरी मिली हुई जल्द ही टेंडर लगाकर नया पुल बनाया जाएगा।

■ 60 हजार बचाने के चक्कर में गंवा सकते हैं 82 लाख रुपये

■ कंपाउंडिंग बताता है कि निवेश में समय ही सबसे बड़ी पूंजी

■ जल्दी शुरुआत करने वालों को मिलता है सबसे बड़ा फायदा

एसआईपी में सिर्फ 1 वर्ष की देरी पड़ सकती है भारी

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले ज्यादातर लोग यह मानते हैं कि जितना अधिक पैसा निवेश करेंगे, उतना बड़ा फंड तैयार होगा। यह बात सही है, लेकिन पूरी सच्चाई नहीं। निवेश विशेषज्ञों का कहना है कि निवेश की रकम से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है निवेश की शुरुआत का समय। यदि कोई व्यक्ति एसआईपी शुरू करने में सिर्फ एक साल की भी देरी करता है तो उसे भविष्य में लाखों रुपये का नुकसान उठाना पड़ सकता है। वित्तीय विशेषज्ञों के अनुसार कंपाउंडिंग की ताकत समय के साथ सबसे अधिक काम करती है। यही वजह है कि एसआईपी की पहली किस्त की कीमत आखिरी किस्त से कई गुना ज्यादा होती है। एक साल की देरी केवल 12 किस्तों का नुकसान नहीं कराती, बल्कि उन किस्तों पर मिलने वाले वर्षों के रिटर्न से भी निवेशक वंचित रह जाता है।

क्यों सबसे अहम है पहली एसआई

कंपाउंडिंग का अर्थ है कि निवेश पर मिलने वाला रिटर्न भी आगे चलकर रिटर्न कमाने लगता है। यानी आपका पैसा केवल बढ़ता नहीं, बल्कि बढ़ा हुआ पैसा भी कमाई करता है। यदि कोई निवेशक 30 वर्ष तक लगातार एसआईपी करता है, तो पहले साल जमा की गई रकम को पूरे 30 वर्षों तक बढ़ने का मौका मिलता है। वहीं अंतिम वर्ष में जमा की गई राशि को केवल कुछ महीनों का ही समय मिलता है। यही कारण है कि शुरुआती निवेश की ताकत सबसे अधिक होती है। विशेषज्ञ इसे निवेश की दुनिया का सबसे बड़ा जादू मानते हैं। जितनी जल्दी शुरुआत होगी, कंपाउंडिंग उतना ही अधिक काम करेगी।

एक साल की देरी का बड़ा नुकसान

मान लीजिए कोई निवेशक हर महीने 5,000 रुपये की एसआईपी करता है और उसे औसतन 12 प्रतिशत वार्षिक रिटर्न मिलता है। यदि वह लगातार 30 वर्षों तक निवेश करता है तो कुल निवेश राशि 18 लाख रुपये होगी। इस अवधि के अंत में उसका फंड लगभग 1.76 करोड़ रुपये तक पहुंच सकता है। लेकिन यदि वही निवेशक एसआईपी शुरू करने में सिर्फ एक वर्ष की देरी कर देता है और केवल 29 वर्ष निवेश करता है, तो उसका अंतिम फंड घटकर लगभग 1.56 करोड़ रुपये रह जाएगा। यानी केवल 60 हजार रुपये (12 किस्तें) का निवेश टालने की कीमत लगभग 20.43 लाख रुपये हो सकती है। यह उदाहरण बताता है कि निवेश में सबसे बड़ा नुकसान बाजार की गिरावट नहीं, बल्कि समय गंवाने से होता है।

जितनी बड़ी एसआई, उतना नुकसान

एक साल की देरी का असर निवेश राशि बढ़ने के साथ और भी ज्यादा दिखाई देता है। यदि कोई निवेशक हर महीने 2,000 रुपये की एसआईपी करता है तो एक साल की देरी से लगभग 8.17 लाख रुपये का संभावित नुकसान हो सकता है। 10,000 रुपये मासिक एसआईपी करने वाले निवेशक के लिए यही नुकसान बढ़कर लगभग 40.87 लाख रुपये तक पहुंच सकता है। वहीं यदि मासिक एसआईपी 20,000 रुपये की है तो केवल एक साल की देरी भविष्य में करीब 82 लाख रुपये के संभावित फंड को कम कर सकती है। यही कारण है कि निवेश विशेषज्ञ हमेशा कहते हैं कि ₹सही समय का इंतजार मत कीजिए, समय को अपने पक्ष में कीजिए।

आखिर में रफ्तार पकड़ती है कंपाउंडिंग

एसआईपी का सबसे दिलचस्प पहलू यह है कि शुरुआती वर्षों में निवेश की रफ्तार धीमी लगती है, लेकिन बाद के वर्षों में वही निवेश तेजी से बढ़ने लगता है।
उदाहरण के तौर पर 5,000 रुपये की मासिक एसआईपी में

- 10 वर्ष बाद कुल निवेश लगभग 6 लाख रुपये होगा और फंड करीब 11.62 लाख रुपये बन सकता है।
- 20 वर्ष बाद कुल निवेश 12 लाख रुपये होगा, लेकिन फंड करीब 50 लाख रुपये तक पहुंच सकता है।
- 30 वर्ष पूरे होने पर कुल निवेश 18 लाख रुपये रहेगा, जबकि फंड बढ़कर लगभग 1.76 करोड़ रुपये हो जाएगा।
- यानी अंतिम दस वर्षों में केवल 6 लाख रुपये का अतिरिक्त निवेश पूरे फंड को 50 लाख रुपये से बढ़ाकर 1.76 करोड़ रुपये तक पहुंचा देता है। यही कंपाउंडिंग की असली ताकत है।

शुरुआत में देरी हो गई तो क्या करें?

यदि किसी कारणवश एसआईपी शुरू करने में देरी हो गई है तो भी नुकसान की भरपाई की जा सकती है।
विशेषज्ञों के अनुसार यदि आपने पहला साल गंवा दिया है तो शेष अवधि में अपनी मासिक एसआईपी थोड़ी बढ़ाकर इस अंतर को काफी हद तक पूरा किया जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि आपकी योजना 5,000 रुपये मासिक एसआईपी की थी और एक साल की देरी हो गई, तो अगले 29 वर्षों तक लगभग 5,655 रुपये प्रति माह निवेश करके उस संभावित अंतर को काफी हद तक भरा जा सकता है। यानी हर महीने केवल 655 रुपये अतिरिक्त निवेश भविष्य में लाखों रुपये का अंतर पैदा कर सकता है।

छोटी एसआईपी भी बनेगी बड़ा फंड

- कई लोग सोचते हैं कि निवेश शुरू करने के लिए बड़ी रकम होना जरूरी है, जबकि वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग है।
- वित्तीय सलाहकारों का कहना है कि यदि फिलहाल बड़ी राशि उपलब्ध नहीं है तो 500 रुपये, 1,000 रुपये या 2,000 रुपये से भी एसआईपी शुरू की जा सकती है। जैसे-जैसे आय बढ़े, वैसे-वैसे एसआईपी की राशि भी बढ़ाई जा सकती है।
- नियमित निवेश और लंबी अवधि का अनुशासन ही बड़ा कोष तैयार करने की सबसे प्रभावी रणनीति है।

समय ही सबसे बड़ा निवेश है

विशेषज्ञों का मानना है कि निवेश की दुनिया में सबसे मूल्यवान चीज पैसा नहीं, बल्कि समय है। बाजार में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे, लेकिन लंबे समय तक निवेश बनाए रखने वाले निवेशकों को कंपाउंडिंग का सबसे बड़ा लाभ मिलता है। यदि आप भविष्य में आर्थिक रूप से मजबूत बनना चाहते हैं तो निवेश की शुरुआत टालने के बजाय जितनी जल्दी संभव हो, उतनी जल्दी एसआईपी शुरू करें। छोटी-सी शुरुआत भी समय के साथ करोड़ों रुपये का फंड तैयार कर सकती है। इसलिए निवेश का सबसे अच्छा समय आज है, क्योंकि एक साल की देरी भविष्य में लाखों नहीं, बल्कि बड़े निवेशकों के लिए करोड़ों रुपये तक का अंतर पैदा कर सकती है।

पीपीएफ या म्यूचुअल फंड पर लें लोन?

- इमरजेंसी में कौन सा विकल्प है बेहतर
- अचानक पैसों की जरूरत पड़ने पर निवेश तोड़े बिना मिल सकती रकम
- दोनों विकल्पों के फायदे, नुकसान और किसके लिए कौन बेहतर

बिजनेस डेस्क

अचानक मेडिकल इमरजेंसी, बिजनेस में नकदी की जरूरत या किसी अन्य जरूरी खर्च के लिए अक्सर लोग अपने निवेश तोड़ देते हैं। लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि लंबी अवधि के निवेश को समय से पहले भुनाने के बजाय उसके बदले लोन लेना कई बार अधिक फायदेमंद साबित होता है। पब्लिक प्रोविडेंट फंड (पीपीएफ) और म्यूचुअल फंड, दोनों पर लोन लेने की सुविधा उपलब्ध है, लेकिन दोनों की शर्तें, ब्याज दरें और लोन की सीमा अलग-अलग हैं। ऐसे में जरूरत और निवेश के आधार पर सही विकल्प चुनना जरूरी है।

पीपीएफ पर लोन: कम ब्याज, लेकिन सीमित सुविधा

पीपीएफ पर लोन केवल एक निश्चित अवधि के दौरान ही लिया जा सकता है। खाता खुलने वाले वित्तीय वर्ष के तीसरे साल से लेकर छठे वित्तीय वर्ष तक ही यह सुविधा मिलती है। यदि पहले लिया गया लोन पूरी तरह चुका दिया गया हो, तभी अगला लोन लिया जा सकता है। लोन की अधिकतम राशि आवेदन से दो वित्तीय वर्ष पहले के खाते में उपलब्ध बैलेंस के केवल 25 प्रतिशत तक सीमित होती है। चूंकि पीपीएफ सरकार समर्थित बचत योजना है, इसलिए इस पर ब्याज भी कम लगता है। वर्तमान में पीपीएफ पर 7.1 प्रतिशत ब्याज मिलता है और लोन की ब्याज दर इससे केवल 1 प्रतिशत अधिक यानी लगभग 8.1 प्रतिशत है। उदाहरण के तौर पर यदि किसी निवेशक को चार लाख रुपये का लोन चाहिए तो उसके पीपीएफ खाते में लगभग 16 लाख रुपये का बैलेंस होना आवश्यक होगा, क्योंकि केवल 25 प्रतिशत राशि ही लोन के रूप में मिल सकती है।

म्यूचुअल फंड पर लोन : ज्यादा रकम और अधिक लचीलापन

म्यूचुअल फंड के बदले लोन निवेशकों के लिए अधिक लचीला विकल्प माना जाता है। यह सुविधा फिजिकल और डीमैट दोनों रूपों में रखी गई म्यूचुअल फंड यूनिट्स पर उपलब्ध है। इसका लाभ व्यक्तिगत निवेशकों के अलावा एचयूएफ, कंपनियां, एलएलपी, ट्रस्ट और साझेदारी फर्में भी ले सकती हैं। इक्विटी, डेट, हाइब्रिड और लिक्विड फंड सभी पर लोन मिल सकता है, हालांकि लोन की सीमा फंड के प्रकार पर निर्भर करती है। डेट और लिक्विड फंड पर आमतौर पर 70 से 80 प्रतिशत तक लोन मिल जाता है, जबकि इक्विटी फंड पर यह सीमा लगभग 50 प्रतिशत रहती है। यदि किसी निवेशक को चार लाख रुपये की जरूरत है तो करीब आठ लाख रुपये के म्यूचुअल फंड निवेश के आधार पर यह राशि मिल सकती है। सबसे बड़ा फायदा यह है कि निवेशक की यूनिट्स बिकती नहीं हैं और वे बाजार में निवेशित बनी रहती हैं, जिससे लंबी अवधि में संपत्ति निर्माण जारी रहता है।

ब्याज और जोखिम में बड़ा अंतर

म्यूचुअल फंड पर लोन की ब्याज दर आमतौर पर 9 से 12 प्रतिशत के बीच होती है। कई बैंक और वित्तीय संस्थान इसे ओवरड्राफ्ट सुविधा के रूप में देते हैं, जिसमें केवल इस्तेमाल की गई राशि पर ही ब्याज देना पड़ता है। हालांकि इसमें एक जोखिम भी है। यदि बाजार गिरता है और म्यूचुअल फंड की नेट एसेट वैल्यू (एनएवी) कम हो जाती है, तो बैंक अतिरिक्त सिक्योरिटी या आंशिक भुगतान की मांग कर सकता है। ऐसा नहीं करने पर गिरवी रखी गई यूनिट्स बेची भी जा सकती हैं।

किसके लिए कौन सा विकल्प बेहतर

वेतनभोगी कर्मचारियों के लिए, जो नियमित एसआईपी करते हैं और अच्छा म्यूचुअल फंड पोर्टफोलियो बना चुके हैं, म्यूचुअल फंड पर लोन बेहतर विकल्प माना जाता है। इससे निवेश टूटता नहीं और कंपाउंडिंग का लाभ भी जारी रहता है। स्वरोजगार या व्यवसाय करने वालों के लिए भी म्यूचुअल फंड पर लोन अधिक उपयोगी है, क्योंकि इसमें बड़ी राशि अपेक्षाकृत जल्दी मिल सकती है।

एसआईएफ की बढ़ती लोकप्रियता से लंपसम निवेश को मिल रही है चुनौती

10 लाख की न्यूनतम निवेश सीमा के बावजूद एसआईएफ की ओर बढ़ा रुझान

जानकारी
बिजनेस डेस्क

विशेषज्ञों का कहना है कि पहले लॉन्ग-शॉर्ट निवेश रणनीति का लाभ केवल कैटेगरी-III अल्टरनेटिव इन्वेस्टमेंट फंड (एआईएफ) के माध्यम से ही मिल पाता था। लेकिन एआईएफ में निवेश की न्यूनतम सीमा एक करोड़ रुपये होती है, जो अधिकांश निवेशकों की पहुंच से बाहर है। इसके विपरीत एसआईएफ में केवल 10 लाख रुपये से निवेश संभव है। इससे संपन्न निवेशकों को कम पूंजी में वही निवेश रणनीति अपनाने का अवसर मिल रहा है। यही कारण है कि बड़ी संख्या में एचएनआई निवेशक अब एसआईएफ को अपनाने लगे हैं।

म्यूचुअल फंड उद्योग में लंपसम निवेशकों के लिए एक नया विकल्प तेजी से उभर रहा है। स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) की बढ़ती लोकप्रियता अब पारंपरिक इक्विटी म्यूचुअल फंडों के लंपसम निवेश को चुनौती देती दिखाई दे रही है। बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि हाल के महीनों में इक्विटी म्यूचुअल फंडों में लंपसम निवेश घटने के पीछे एसआईएफ की बढ़ती स्वीकार्यता भी एक अहम वजह हो सकती है। पिछले महीने इक्विटी म्यूचुअल फंडों में शुद्ध निवेश (नेट इनफ्लो) में करीब 40 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई, जबकि दूसरी ओर एसआईपी (एसआईपी) निवेश लगातार मजबूत बना रहा। इससे यह संकेत मिला कि छोटे निवेशक नियमित निवेश जारी रखे हुए हैं, जबकि बड़े निवेशक अब नए विकल्पों की तलाश कर रहे हैं।

सात माह में सात गुना बढ़ा एयूएम

पिछले वर्ष शुरू किए गए स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड्स ने बेहद कम समय में निवेशकों का भरोसा जीत लिया है। अक्टूबर 2025 में इनका एसेट अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) लगभग 2,010 करोड़ रुपये था, जो मई 2026 तक बढ़कर 13,814 करोड़ रुपये के करीब पहुंच गया। यानी महज सात महीनों में इनका आकार लगभग सात गुना बढ़ गया। हालांकि एसआईएफ में निवेश के लिए न्यूनतम 10 लाख रुपये की सीमा तय की गई है, फिर भी हाई नेटवर्थ इंडिविजुअल (एचएनआई) निवेशकों में इसका आकर्षण लगातार बढ़ रहा है।

हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम पसंद

एसआईएफ के भीतर सबसे अधिक लोकप्रियता हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम को मिली है। मई 2026 तक इस श्रेणी में करीब 9,709 करोड़ रुपये का निवेश आया, जो कुल एसआईएफ एसेट्स का लगभग 70 प्रतिशत है। इन योजनाओं में प्रति फोलियो औसत निवेश भी सबसे अधिक रहा। हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में औसत निवेश करीब 33.86 लाख रुपये प्रति फोलियो दर्ज किया गया। इसके मुकाबले इक्विटी लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में यह आंकड़ा 15.64 लाख रुपये और इक्विटी एक्स-टॉप-100 लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में 12.77 लाख रुपये रहा। विशेषज्ञों का कहना है कि यह आंकड़ा बताता है कि संपन्न निवेशक इस नई श्रेणी पर तेजी से भरोसा जता रहे हैं।

क्यों बढ़ रही है एसआईएफ मांग

बाजार जानकारों के अनुसार एसआईएफ की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह निवेशकों को बेहतर जोखिम-समायोजित रिटर्न देने की कोशिश करता है। विशेष रूप से हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट रणनीति बाजार में गिरावट के दौरान भी नुकसान को सीमित रखने का प्रयास करती है। हालिया बाजार सुधार के दौरान इन योजनाओं ने सकारात्मक रिटर्न देकर निवेशकों का भरोसा और मजबूत किया है। यही वजह है कि कई निवेशक अब पारंपरिक लंपसम इक्विटी निवेश की जगह एसआईएफ को प्राथमिकता दे रहे हैं।

म्यूचुअल फंडों पर पड़ेगा असर?

विशेषज्ञों का मानना है कि अभी यह कहना जल्दबाजी होगी कि एसआईएफ पारंपरिक म्यूचुअल फंडों का स्थान ले लेंगे। फिलहाल इसका प्रभाव मुख्य रूप से बड़े लंपसम निवेशकों तक सीमित है। एसआईपी निवेश में किसी प्रकार की कमजोरी देखने को नहीं मिली है। इससे स्पष्ट है कि खुदरा निवेशक अभी भी नियमित निवेश के लिए पारंपरिक म्यूचुअल फंडों पर भरोसा बनाए हुए हैं। हालांकि यदि एसआईएफ का प्रदर्शन लगातार बेहतर रहता है तो आने वाले वर्षों में बड़े निवेशकों का एक हिस्सा इस श्रेणी की ओर शिफ्ट हो सकता है।

किन निवेशकों के लिए बेहतर है एसआईएफ

विशेषज्ञों के अनुसार एसआईएफ उन निवेशकों के लिए उपयुक्त हो सकता है जिनके पास पहले से बड़ा निवेश पोर्टफोलियो है और जो बाजार की अस्थिरता के बीच बेहतर जोखिम प्रबंधन चाहते हैं। विशेष रूप से ऐसे निवेशक जो एकमुश्त बड़ी राशि निवेश करते हैं और केवल इक्विटी पर निर्भर नहीं रहना चाहते, उनके लिए यह एक बेहतर विकल्प बन सकता है। इसके अलावा फिक्स्ड इनकम निवेशक, जो सीमित जोखिम के साथ अपेक्षाकृत बेहतर रिटर्न चाहते हैं, वे भी भविष्य में इस श्रेणी की ओर आकर्षित हो सकते हैं।

अभी भी कई चुनौतियां बाकी

हालांकि विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि एसआईएफ को व्यापक स्तर पर लोकप्रिय होने में अभी समय लगेगा। निवेशकों में जागरूकता बढ़ाने, वितरकों को प्रशिक्षित करने और लंबी अवधि का प्रदर्शन रिकॉर्ड तैयार होने के बाद ही यह श्रेणी बड़े पैमाने पर स्वीकार की जाएगी। निवेशकों के लिए यह भी जरूरी होगा कि वे केवल शुरुआती प्रदर्शन देखकर निवेश न करें, बल्कि फंड की रणनीति, जोखिम, शुल्क और अपने वित्तीय लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए निर्णय लें।

लंबी अवधि में बदल सकता है निवेश का परिदृश्य

वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि भारतीय निवेश उद्योग तेजी से विकसित हो रहा है। जैसे-जैसे निवेशकों की समझ बढ़ेगी, वे पारंपरिक इक्विटी और डेट फंडों से आगे बढ़कर नई निवेश रणनीतियों को भी अपनाएंगे। स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड इसी बदलाव का संकेत हैं। यदि इनका प्रदर्शन स्थिर और बेहतर बना रहता है तो आने वाले वर्षों में यह हाई नेटवर्थ निवेशकों के पोर्टफोलियो का महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकते हैं। हालांकि खुदरा निवेशकों के लिए एसआईपी आधारित म्यूचुअल फंड अभी भी सबसे सरल, अनुशासित और प्रभावी निवेश विकल्प बने हुए हैं।

20 साल की एसआईपी में सिर्फ पांच फंड ही बने असली 'वेल्थ क्रिएटर'

बिजनेस डेस्क। म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले अधिकांश निवेशकों का सपना होता है कि उन्हें लंबे समय तक लगातार बेहतर रिटर्न मिले। हालांकि, ऐसा करने वाले फंड बहुत कम हैं। करीब 600 सक्रिय इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के विश्लेषण में केवल पांच ऐसी योजनाएं सामने आई हैं, जिन्होंने 3, 5, 10, 15 और 20 वर्ष जैसी सभी प्रमुख निवेश अवधियों में 15 प्रतिशत से अधिक सालाना एसआईपी रिटर्न दिया है। यह विश्लेषण वैल्यू रिसर्च के 29 जून 2026 तक के आंकड़ों पर आधारित है। सबसे खास बात यह है कि इस सूची में कोई भी फ्लेक्सी–कैप या लार्जकैप फंड शामिल नहीं है। दो मिडकैप, दो हेल्थकेयर और एक इंफ्रास्ट्रक्चर थीम आधारित फंड ने निवेशकों को लंबी अवधि में शानदार संपत्ति बनाने का अवसर दिया। यह दर्शाता है कि मजबूत सेक्टरों में लंबे समय तक धैर्य के साथ निवेश करने वाले निवेशकों को बेहतरीन रिटर्न मिला।

ये हैं पांच सबसे सफल एसआईपी फंड

- इस सूची में एचएसबीसी मिडकैप फंड (रेगूलर) पहले स्थान पर है। इस फंड ने 3 वर्ष में 20.05%, 5 वर्ष में 21.46%, 10 वर्ष में 18.39%, 15 वर्ष में 18.96% और 20 वर्ष में 17.70% का वार्षिक एसआईपी रिटर्न दिया। निवेशक ने 20 वर्षों तक हर महीने 10,000 की एसआईपी की होती, तो उसका निवेश बढ़कर 1.86 करोड़ हो जाता।
- दूसरे स्थान पर एसबीआई हेल्थकेयर ऑपर्च्युनिटी फंड (रेगूलर) रहा। इसने 20 वर्षों में 16.80 प्रतिशत वार्षिक एसआईपी रिटर्न दिया और 10,000 मासिक निवेश को लगभग 1.68 करोड़ रुपये में बदल दिया।
- तीसरे स्थान पर आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल मिडकैप फंड रहा। इस फंड ने 20 वर्षों में 16.52 प्रतिशत का रिटर्न दिया और लगभग 1.61 करोड़ का कोष तैयार किया।
- चौथे स्थान पर यूटीआई हेल्थकेयर म्यूचुअल फंड (रेगूलर) रहा, जिसने 20 वर्षों में 15.61 प्रतिशत रिटर्न देते हुए 10,000 की मासिक एसआईपी को लगभग 1.45 करोड़ रुपये तक पहुंचाया।
- पांचवें स्थान पर डीएसपी इंडिया टीआईजीईआर फंड (रेगूलर) रहा। इंफ्रास्ट्रक्चर थीम पर आधारित इस फंड ने 20 वर्षों में 15.40 प्रतिशत रिटर्न दिया और निवेशकों का कोष करीब 1.40 करोड़ रुपये तक पहुंचा दिया।

अमेरिकी ब्याज दरों, ट्रेजरी यील्ड और वैश्विक अनिश्चितता से बढ़ा दबाव

सात माह के निचले स्तर पर सोना-चांदी, ऐसे में क्या करें निवेशक

बिजनेस डेस्क

जुलाई की शुरुआत सर्राफा बाजार के लिए झटके भरी रही। 1 जुलाई को घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में सोने और चांदी की कीमतों में बड़ी गिरावट दर्ज की गई। अमेरिकी ट्रेजरी यील्ड में तेजी, फेडरल रिजर्व की सख्त मौद्रिक नीति के संकेत और वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं ने निवेशकों की धारणा को प्रभावित किया। इसका असर यह हुआ कि सोना और चांदी दोनों सात महीने के निचले स्तर के करीब पहुंच गए। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि यह गिरावट केवल नकारात्मक संकेत नहीं है, बल्कि लंबी अवधि के निवेशकों के लिए अवसर भी बन सकती है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर अगस्त डिलीवरी वाला सोना 1,701 रुपये यानी 1.19 प्रतिशत टूटकर करीब 1.40 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ। वहीं सितंबर डिलीवरी वाली चांदी में और बड़ी गिरावट देखने को मिली। चांदी 5,380 रुपये यानी 2.35 प्रतिशत लुढ़ककर 2.23 लाख रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर आ गई।
अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी कमजोरी का यही रुख दिखाई दिया। कॉमेक्स पर सोना करीब 4,000 डॉलर प्रति औंस के महत्वपूर्ण स्तर के आसपास सात महीने के निचले स्तर पर कारोबार करता रहा, जबकि चांदी लगभग तीन प्रतिशत गिरकर 57.73 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गई।

अमेरिकी फेड की सख्ती बनी सबसे बड़ी वजह

बाजार विशेषज्ञों के अनुसार इस गिरावट की सबसे बड़ी वजह अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व का सख्त रुख है। हाल के दिनों में फेड अधिकारियों ने संकेत दिए हैं कि यदि महंगाई पूरी तरह नियंत्रण में नहीं आती है तो इस वर्ष के अंत तक ब्याज दरों में एक और बढ़ोतरी की जा सकती है। ब्याज दरें बढ़ने से निवेशकों का रुझान सोने जैसी बिना ब्याज वाली परिसंपत्तियों से हटकर बॉन्ड और अन्य ब्याज देने वाले निवेश विकल्पों की ओर बढ़ जाता है। यही कारण है कि सोने और चांदी पर बिकवाली का दबाव लगातार बना हुआ है।

ट्रेजरी यील्ड और मजबूत डॉलर का असर

अमेरिकी सरकारी बॉन्ड यानी ट्रेजरी की यील्ड में तेजी ने भी सोने की चमक फीकी कर दी है। जब ट्रेजरी यील्ड बढ़ती है तो निवेशकों को सुरक्षित और बेहतर रिटर्न वाले विकल्प मिलने लगते हैं। इससे सोने की मांग घटती है। इसके साथ ही डॉलर इंडेक्स में मजबूती आने से भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने और चांदी की कीमतों पर दबाव बढ़ा। चूंकि सोने का कारोबार डॉलर में होता है, इसलिए डॉलर मजबूत होने पर अन्य देशों के निवेशकों के लिए सोना महंगा हो जाता है और मांग कमजोर पड़ जाती है।

मध्य-पूर्व में बढ़ता तनाव भी चिंता का कारण

मध्य-पूर्व में एक बार फिर बढ़ते तनाव ने बाजार की चिंता बढ़ा दी है। ईरान और अमेरिका के बीच रिश्तों में आई तल्खी तथा शांति वार्ता को लेकर अनिश्चितता ने निवेशकों को सतर्क बना दिया है। हालांकि सामान्य परिस्थितियों में ऐसे तनाव के दौरान सोने को सुरक्षित निवेश माना जाता है, लेकिन इस समय ब्याज दरों और डॉलर की मजबूती का प्रभाव अधिक देखने को मिल रहा है। इसके अलावा कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव ने भी वैश्विक महंगाई को लेकर नई चिंताएं पैदा कर दी हैं। यदि तेल महंगा होता है तो महंगाई बढ़ सकती है, जिससे केंद्रीय बैंक ब्याज दरें लंबे समय तक ऊंची रख सकते हैं।

अब अमेरिकी आंकड़ों पर टिकी नजर

बाजार की अगली दिशा काफी हद तक अमेरिका से आने वाले आर्थिक आंकड़ों पर निर्भर करेगी। निवेशकों की नजर जून के ADP रोजगार आंकड़ों और नॉन-फार्म पेरोल डेटा पर है। यदि रोजगार के आंकड़े मजबूत आते हैं तो फेड के लिए ब्याज दरें ऊंची बनाए रखने का आधार मजबूत होगा, जिससे सोने पर दबाव बना रह सकता है। वहीं, यदि आंकड़े उम्मीद से कमजोर आते हैं तो ब्याज दरों में नरमी की उम्मीद बढ़ेगी और सोना-चांदी में रिकवरी देखने को मिल सकती है।

विशेषज्ञों की राय: अभी सतर्कता जरूरी

सर्राफा बाजार के जानकारों का कहना है कि फिलहाल तकनीकी रूप से सोना और चांदी दोनों कमजोर स्थिति में हैं। विशेषज्ञों के अनुसार यदि अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोना 4,000 डॉलर प्रति औंस के स्तर से नीचे बना रहता है तो अगला मजबूत सपोर्ट 3,600 डॉलर प्रति औंस के आसपास दिखाई देता है। इसी तरह चांदी यदि 60 डॉलर प्रति औंस के नीचे टिकती है तो इसमें 50 डॉलर प्रति औंस तक गिरावट की संभावना बनी रह सकती है। हालांकि लगातार बिकवाली के कारण दोनों धातुएं अब ओवरसोल्ड जोन में पहुंच चुकी हैं। ऐसे में किसी भी सकारात्मक वैश्विक संकेत या कमजोर अमेरिकी आर्थिक आंकड़ों के बाद तेज तकनीकी रिकवरी भी संभव है।

विशेषज्ञ बोले- जल्दबाजी नहीं, रणनीति के साथ ही करें निवेश

क्या यह खरीदारी का सही समय है?

विशेषज्ञों का मानना है कि लंबी अवधि के निवेशकों को घबराने की जरूरत नहीं है। यदि किसी का निवेश लक्ष्य पांच से दस वर्ष या उससे अधिक का है तो ऐसी गिरावट चरणबद्ध निवेश (स्टैगर्ड इन्वेस्टमेंट) का अवसर बन सकती है। एकमुश्त निवेश करने के बजाय किस्तों में खरीदारी करना अधिक सुरक्षित रणनीति मानी जा रही है। इससे यदि कीमतें और गिरती हैं तो औसत खरीद मूल्य कम किया जा सकता है। वहीं अल्पकालिक ट्रेडर्स को फेडरल रिजर्व के अगले संकेत, अमेरिकी बॉन्ड यील्ड, डॉलर इंडेक्स और वैश्विक घटनाक्रमों पर लगातार नजर बनाए रखनी चाहिए।

दीर्घकाल में बनी रहेगी सोने की अहमियत

सोना सदियों से महंगाई, आर्थिक संकट और वैश्विक अनिश्चितताओं के दौरान सबसे भरोसेमंद निवेश विकल्प माना जाता रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि अल्पकाल में कीमतों में उतार-चढ़ाव स्वाभाविक है, लेकिन लंबी अवधि में सोना निवेश पोर्टफोलियो को स्थिरता देने का महत्वपूर्ण माध्यम बना रहेगा। यही कारण है कि वित्तीय सलाहकार कुल निवेश का एक हिस्सा सोना और चांदी जैसी कीमती धातुओं में रखने की सलाह देते हैं। मौजूदा गिरावट को केवल कमजोरी के रूप में नहीं, बल्कि रणनीतिक निवेश के अवसर के रूप में भी देखा जा सकता है। हालांकि किसी भी निवेश निर्णय से पहले अपनी जोखिम क्षमता, निवेश अवधि और वित्तीय सलाहकार की राय को जरूर ध्यान में रखना चाहिए।

खबर संक्षेप

स्वामी विवेकानन्द को श्रद्धा सुमन अर्पित किए

भिवानी। शनिवार को वैश्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल भिवानी में भारत के स्वामी विवेकानन्द की पुण्य तिथि श्रद्धापूर्वक मनाई गई। इस अवसर पर डॉ. पवन कुमार बुवानीवाला अध्यक्ष प्रबन्ध-समिति, विजयकिशन जी अग्रवाल, महेश गर्ग सी.ई.ओ. और सभी स्टाफ-सदस्यों ने स्वामी विवेकानन्द की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर पुष्प अर्पित किये। इसी कड़ी में डॉ.पवन कुमार बुवानीवाला ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द महान आध्यात्मिक गुरू, समाज सुधारक और युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत थे।

चंदे में हेराफेरी करने वाले आस्था के दुश्मन : फौगाट

भिवानी। भारत के गौरवशाली इतिहास में मंदिरों का स्थान हमेशा से सर्वोच्च रहा है, लेकिन यह भी एक कड़वी सच्चाई है कि देश के प्रतिष्ठित मंदिरों के पास मौजूद अकूत संपत्ति ही हमेशा से विदेशी आक्रांताओं के आकर्षण, राजनीतिक वर्चस्व और आक्रमणों का मुख्य कारण बनी। यह बात अखिल भारतीय जाट आरक्षण संघर्ष समिति के जिला प्रधान कुलदीप फौगाट ने ऐतिहासिक तथ्यों और वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों का हवाला देते हुए प्रैस को जारी ब्यान में कही।

उत्कृष्ट शैक्षणिक प्रदर्शन करने वाले छात्र सम्मानित

भिवानी। सांगा स्थित राजकीय वमावि में छात्र-छात्राओं के सम्मान में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता प्राचार्य दीपक कुमार ने की। मुख्य अतिथि के रूप में कर्नल सतीश कुमार तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व प्रधानाध्यापक चाँदराम एवं उनकी पुत्रवधू सरोज देवी उपस्थित रहे। इस अवसर पर कक्षा 8वीं से 12वीं तक उत्कृष्ट शैक्षणिक प्रदर्शन करने वाले 19 मेधावी छात्र-छात्राओं व एक छात्रा को विशेष ट्रॉफी एवं नकद पुरस्कार देकर कुल 24 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

एसआईआर को लेकर किया जागरूक

बवानीखेड़ा। बीपीआर पब्लिक स्कूल में भारत निर्वाचन आयोग द्वारा चलाए जा रहे एसआईआर को लेकर जागरूकता सेमिनार आयोजित किया गया। इस दौरान विद्यार्थियों को मतदाता सूची के विशेष पुनरीक्षण अभियान, उसके उद्देश्य तथा मतदाता सूची में नाम जोड़ने, संशोधन और सत्यापन की प्रक्रिया के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। सेमिनार में शिक्षक ने ब्लैकबोर्ड के माध्यम से विद्यार्थियों को बताया कि एसआईआर का उद्देश्य मतदाता सूची को अधिक सटीक, पारदर्शी और अद्यतन बनाना है।

भगवान की प्रेरणा से होता है सेवा कार्य :रविंद्र

भिवानी। निशुल्क शिक्षा को समर्पित श्री राम पाठशाला के सभी विद्यार्थियों को रविंदर अग्रवाल कैरू वाले ने स्कूल ड्रेस भेंट की । अपने आशीर्वचनों में रविंद्र ने कहा की श्रीराम पाठशाला एक सेवा का प्रकल्प है और भगवान की प्रेरणा और शक्ति से ही ऐसे सेवा कार्य संचालित होते हैं। उन्होंने कहा कि उनके परिवार पर भी भगवान का ही आशीर्वाद है कि उनके बेटों और परिवार ने श्री राम पाठशाला जैसे सेवा कार्य के यज्ञ में आहुति देने का मन बनाया ।

धमकी देने के मामले में 6 आरोपी गिरफ्तार

चरखी दादरी। अपराध शाखा चरखी दादरी गांव सांवड़ में हुए सामूहिक रूप से मारपीट, घर में तोडफ़ोड़ एवं जान से मारने की धमकी देने के मामले में 6 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपितयों में उज्जवल निवासी हिन्डौल, निखिल निवासी हिन्डौल, नितेश निवासी हिन्डौल, रतन निवासी साँकरोड़, ललित उनिवासी सांवड़ व रोहित निवासी सांजरवास को गिरफ्तार किया ।

टूटी सड़कें और बिजली-पानी संकट से त्रस्त भिवानी : प्रदीप गुलिया

मानसून ने खोली विकास के दावों की पोल : प्रदीप

बिना पर्ची-बिना खर्ची का ढोंग हो चुका है बेनकाब भाजपा नेताओं के संरक्षण में चल रहा लूट का खेल : अनिरूद्ध चौधरी

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

भिवानी। पत्रकारों से बातचीत करते कांग्रेसी नेता। *फोटो: हरिभूमि*

जैन चौक स्थित तिलक भवन में शनिवार को जिला कांग्रेस कमेटी की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक के बाद आयोजित पत्रकार वार्ता में कांग्रेस के ग्रामीण जिला अध्यक्ष अनिरुद्ध चौधरी और शहरी जिला अध्यक्ष प्रदीप गुलिया जोगी ने भाजपा सरकार के खिलाफ चौतरफा मोर्चा खोलते हुए तीखे राजनीतिक बाण चलाए। कांग्रेस नेताओं ने बिना पर्ची-बिना खर्ची के सरकारी दावों की धज्जियां उड़ाते हुए आरोप लगाया कि आज भाजपा के रसूखदार नेताओं के संरक्षण में भ्रष्टाचार का खेल खुलेआम चल रहा है, जबकि आम जनता बुनियादी सुविधाओं के लिए तरस रही है। राम मंदिर के मुद्दे पर भाजपा को आड़े हाथों लेते हुए कांग्रेस जिला अध्यक्षों ने कहा कि देश की जनता सुबह उठते ही सबसे पहले प्रभु राम का नाम पूरी आस्था के साथ लेती है, लेकिन भाजपा ने राम नाम को सिर्फ अपनी राजनीति चमकाने और निजी हित साधने का जरिया बना लिया है। उन्होंने आरोप लगाया कि राम मंदिर के नाम पर हुए करोड़ों रुपये के चंदे घोटाले के मुख्य आरोपियों को पकडऩे की बजाय सरकार छोटे-मोटे चेहरों पर कार्रवाई कर जनता को गुमराह कर रही है। शहरी जिला अध्यक्ष प्रदीप गुलिया जोगी ने भिवानी शहर की बदहाली का खाका खींचते हुए कहा कि आज पूरा जिला बिजली, पानी और टूटी सड़कों की समस्या से जूझ रहा है। मानसून आते ही दावों की पोल खुल चुकी है, चारों तरफ अव्यवस्था का माहौल है। उन्होंने एचकेआरएन के तहत काम करने वाले गरीब कर्मचारियों को पिछले चार महीनों से वेतन तक नहीं मिला है।

भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे हैं नेता

पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए ग्रामीण जिला अध्यक्ष अनिरुद्ध चौधरी और शहरी जिला अध्यक्ष प्रदीप गुलिया जोगी ने तोशाम में विजिलेंस द्वारा 65 हजार रुपये की रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किए गए कानूनगो के मामले को जोर-शोर से उठाया। उन्होंने आरोप लगाया कि गिरफ्तार आरोपी कानूनगो स्वयं को भाजपा, पूर्व राज्यसभा सांसद किरण चौधरी और मंत्री श्रुति चौधरी का समर्थक और नेता बताता है। उन्होंने कहा कि बिना पर्ची-बिना खर्ची का ढोल पीटने वाली भाजपा सरकार का असली चेहरा सामने आ चुका है। इनके अपने ही नेता भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे हैं और आम जनता की खून-पसीने की कमाई को दोनों हाथों से लूट रहे हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं को मिलेगी नई रफ्तार

- 8 .26 लाख की लागत से लगेगी आधुनिक सीआर एक्स-रे मशीन, पीडब्ल्यूडी करेगा एक्स-रे कक्ष को सुरक्षित तैयार

दीपक कुमार डुमड़ा ⏭ बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा क्षेत्रवासियों को जल्द ही नागरिक अस्पताल बवानीखेड़ा में आधुनिक एक्स-रे सुविधा का लाभ मिलने जा रहा है। मरीजों को बेहतर एवं त्वरित स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से अस्पताल में 8.26 लाख (8,26,500 रुपये) की लागत से नई सीआर (कम्प्यूटेड रेडियोग्राफी) एक्स-रे मशीन स्थापित की जाएगी।

सामान्य अस्पताल के भवन का दृश्य।

अस्पताल में है प्रतिदिन की 300 के करीबन ओपीडी

नागरिक अस्पताल में प्रतिदिन औसतन करीब 300 मरीज ओपीडी में उपचार के लिए पहुंचते हैं। लगभग 50 मरीजों के एक्स-रे किए जाते हैं। नई डिजिटल सीआर मशीन लगने के बाद एक्स-रे जांच पहले की तुलना में अधिक तेज, स्पष्ट और गुणवत्तापूर्ण होगी।

ट्रांसपोर्ट होना बाकी, कमरा जल्द होगा तैयार

चिकित्सक विनय यादव ने बताया कि 826500 रुपये की लागत से मशीन को खरीद किया गया है। कमरे के लिए विभाग को लिखा गया है जल्द कमरा तैयार होते ही मशीन अपने कक्ष में होगी। मरीजों को फिर से सुविधाएं मिलेगी।

विकास के मामले में कोई कोर कसर नहीं छोडेंगे

विधायक कपूर वाल्मीकि ने बताया कि सवा आठ लाख की लागत से नई तकनीक की एक्सरे मशीन जल्द स्थापित होगी। इसके अलावा वे विकास मामले में शहर को पीछे नहीं रहने देगें। वे योजनाबद्ध तरीके से कार्य करवाने में जुटे हैं। सरकार के खजाना कोष धनराशि से लबालब है।

खेल मंत्री गौरव गौतम से उनके जन्मदिन पर मिले भाजपा मंडल अध्यक्ष जगत कौशिक

तोशाम। खेल मंत्री को गुलदस्ता देकर सम्मानित करते हुए।

तोशाम। भाजपा बापोड़ा मंडल अध्यक्ष जगत कौशिक ने हरियाणा के खेल मंत्री गौरव गौतम से उनके जन्मदिन पर शिष्टाचार भेंट कर उन्हें शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर जगत कौशिक ने खेल मंत्री गौरव गौतम का स्वागत करते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में प्रदेश में खेलों को नई दिशा और युवाओं को बेहतर अवसर मिल रहे हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि हरियाणा सरकार खेलों के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करती रहेगी। खेल मंत्री गौरव गौतम ने भी भिवानी जिले से पहुंचे प्रतिनिधिमंडल का आभार व्यक्त किया और प्रदेश में खेलों के विकास तथा खिलाड़ियों को हर संभव सुविधा उपलब्ध कराने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई। इस दौरान दोनों नेताओं के बीच संगठन और प्रदेश के विकास सहित विभिन्न विषयों पर भी सकारात्मक चर्चा हुई। इस अवसर पर उनके साथ भाजपा जिला कार्यकारिणी सदस्य इमरान बापोड़ा और मंडल के कार्यकर्ता मौजूद रहे।

सीनियर राज्य स्तरीय नेटबॉल प्रतियोगिता का शानदार आगाज

भिवानी। खेल प्रेमियों और युवाओं के लिए बेहद उत्साहजनक खबर है। स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी राई सोनीपत में सीनियर राज्य स्तरीय नेटबॉल चैंपियनशिप (पुरुष व महिला) सत्र 2026-27 का बेहद भव्य और ऊर्जावान शुभारंभ आज हुआ । प्रतियोगिता के पहले ही दिन खिलाड़ियों में गजब का उत्साह और खेल भावना देखने को मिली। नेटबॉल एसो. हरियाणा के महासचिव बबीता दहिया ने प्रतियोगिता की जानकारी साझा करते हुए बताया कि इस राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में हरियाणा की खेल प्रतिभाएं हिस्सा ले रही हैं।

सर्व कल्याण मंच ने एक और दिया टारगेट: नवीन

- मुंढाल में शिक्षा की नई उड़ान सर्व कल्याण मंच ने शुरू की नि :शुल्क टारगेट लाइब्रेरी

हरिभूमि न्यूज ⏭ बवानीखेड़ा

लाइब्रेरी का शुभारंभ करवाते हुए।

ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में सर्व कल्याण मंच ने गांव मुंढाल में निशुल्क टारगेट लाइब्रेरी का शुभारंभ किया। मंच के अध्यक्ष नवीन कौशिक ने नपा प्रधान सुंदर अत्री संग रिबन काटकर लाइब्रेरी का उद्घाटन किया। उद्घाटन के अवसर पर नवीन कौशिक ने कहा कि शिक्षा ही समाज और राष्ट्र के विकास की सबसे मजबूत नींव है। ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक प्रतिभाशाली विद्यार्थी संसाधनों एवं उचित अध्ययन वातावरण के अभाव में अपने सपनों को साकार नहीं कर पाते। इसी उद्देश्य से सर्व कल्याण मंच ने यह निःशुल्क लाइब्रेरी शुरू की है।

लाखों की सोलर लाइटें बनी सफेद हाथी

हरिभूमि न्यूज ⏭ बाढड़ा

कस्बे को जगमग करने और राहगीरों की राह आसान करने के नाम पर खर्च किए गए लाखों रुपये अब धूल फांक रहे हैं। जिस बजट से सड़कों को रोशन होना था, वह अब तकनीकी खामियों और प्रशासनिक अनदेखी की भेंट चढ़ चुका है। कस्बे के लोहारू, दादरी, सतनाली व जुई रोड जैसे व्यस्त मार्गों पर लगी सोलर लाइटें अब महज लोहे के खंभे बनकर रह गई हैं। आलम यह है कि सूरज ढलते ही ये सड़क मार्ग अंधेरे की आगोश में समा जाते हैं, जिससे न केवल राहगीर बल्कि दुकानदार भी असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। सुधार नहीं तो आंदोलन ग्रामीणों का कहना है कि बार-बार गुहार लगाने के बाद भी प्रशासन की कुंभकर्णी नींद नहीं खुली, जिससे अब ग्रामीणों का धैर्य जवाब दे रहा है। ग्रामीणों ने दोटूक कहा है कि अगर सप्ताह के भीतर लाइटें ठीक करने की प्रक्रिया शुरू नहीं हुई, तो वे मुख्यालय पर विरोध प्रदर्शन करेंगे।

शुरुआत में चमकीं, अब दम तोड़ रहीं

सुरेश, अनिल, संजीव आदि ने बताया कि करीब तीन-चार साल पहले जब ये लाइटें लगी थीं, तो लगा था कि कस्बे की तस्वीर बदलेगी। कुछ महीनों तक तो सब ठीक रहा, लेकिन मेंटेनेंस के अभाव में धीरे-धीरे इनकी बैटरियां जवाब दे गईं और पैनल खराब हो गए। लोहारू रोड की स्थिति सबसे ज्यादा खराब है, जहां एक भी लाइट जलती नजर नहीं आ रही है। लेकिन प्रशासन व विभाग मामले में कोई ध्यान नही दे रहा है।

खौफ का साया: अंधेरे में असामाजिक तत्व और गड्ढे

स्थानीय निवासी राजेश, साहिल और सोमबीर ने बताया कि अंधेरे के कारण रात के समय असामाजिक तत्वों का डर बना रहता है। वही दुकानों में चारी होने का भय भी बना रहता है। सडक़ों की हालत पहले से खराब है, ऊपर से लाइट न होने के कारण गड्ढे दिखाई नहीं देते। इससे दोपहिया वाहन चालक अक्सर दुर्घटना का शिकार हो रहे हैं।

जल्द अधिकारियों से मिलकर समाधान की मांग करेंगे

बाढड़ा व्यापार मंडल अध्यक्ष सुंदरपाल ने बताया कि कस्बे के चारों सडक़ मार्गो पर सोलर लाइटें लगी हुई है। लेकिन अभी कु छ लाईटे खराब है जिन्हे ठीक करवाने के लिए जल्द अधिकारियों से मिलकर समाधान की मांग करेंगे।

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय पालुवास के 25 खिलाड़ी राष्ट्रीय स्तर पर चयनित

रभिवानी। केंद्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय गुरुग्राम संभाग द्वारा आयोजित खेलकूद प्रतियोगिताओं में पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय पालुवास के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विद्यालय का नाम रोशन किया है। प्रतियोगिताओं में 40 विद्यार्थियों ने स्वर्ण, रजत एवं कांस्य पदक जीतकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। सातवीं की छात्रा दिव्या ने 600 मीटर दौड़ में रजत पदक प्राप्त कर राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता के लिए चयन सुनिश्चित किया। राष्ट्रीय स्तर पर चयनित विद्यार्थियों में बारहवीं की दिव्या (योग), जय (34–36 किलोग्राम वर्ग ,बॉक्सिंग), गौरव कौशिक (बॉक्सिंग), रोमी समोटा (बॉक्सिंग), मानवी शर्मा (बॉक्सिंग), रूपा (बॉक्सिंग), जतिन वर्मा (योग), नवनीत जांगड़ा (योग), पूर्वी (योग), विधि (योग), इशिका (योग), दिया और मानसी यादव (अंडर-17 वॉलीबॉल), पायल (अंडर-19 शतरंज), सुधांशु (अंडर-14 शतरंज), प्रकृति (अंडर-17 बैडमिंटन), काव्या (अंडर-19 बैडमिंटन) तथा हर्ष तंवर सहित कुल 25 विद्यार्थियों का चयन राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिए हुआ है।

कृतिका, हर्षिता एवं नूर रहे प्रथम

- बीके विद्यालय में प्रतिभा को निखारने के लिए आयोजित कार्यक्रम का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ⏭ बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा। बी . के . वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारने के लिए अंतर्सदनीय अंग्रेजी डेक्लेमेशन प्रतियोगिता के आयोजन में उपस्थितजन।

बीके वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारने के लिए अंतर्सदनीय अंग्रेजी डेक्लेमेशन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रार्थना के साथ प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया। इस प्रतियोगिता में कक्षा छठी से आठवीं तक के विद्यार्थियों ने बढ़- चढ़ कर प्रतिभागिता की। मंच का कुशलता पूर्वक संचालन सातवीं कक्षा की छात्रा कीर्ति ने किया। निर्णायक मंडल की भूमिका आचार्य डीआर एवं आचार्या नविता शर्मा ने निभाई। सभी प्रतिभागियों ने आत्मविश्वास, अनुशासन, सकारात्मक चिंतन की शक्ति, सदैव उत्साह से भरे रहना जैसे विषयों पर सुमधुर वाणी में अपने विचारों की अद्भुत प्रस्तुति दी।

श्रेया एवं तेजस्विनी द्वितीय स्थान पर रही

तक्षशिला सदन से छात्रा कृतिका, हर्षिता एवं नूर ने प्रथम स्थान, इंद्रप्रस्थ सदन से छात्रा श्रेया एवं तेजस्विनी ने द्वितीय तथा शांतिनिकेतन सदन से छात्रा खुशी, परी एवं सिद्धार्थ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्राचार्य पंकज कुमार मिश्रा ने प्रतिभागियों का उत्साह बढ़ाया। उन्होंने विद्यार्थियों से यह आह्वान भी किया कि हरियाणा को नशा मुक्त रखने में अपना योगदान दे, साथ ही उन्होंने विद्यार्थियों को एस.आई.आर. के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि निर्वाचन आयोग द्वारा नागरिकता की पहचान के लिए यह अभियान चलाया गया है।

चानौत की पेयजल समस्या के समाधान की मांग

बाढड़ा। भारतीय किसान मजदूर यूनियन की अगुवाई में उपमंडल के किसानों ने चानौत में पेयजल संबधी समस्या का तत्काल समाधान करने की मांग को लेकर एसडीएम कार्यालय के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजा। कस्बे के किसान भवन में भारतीय किसान मजदूर यूनियन जिलाध्यक्ष राजकुमार हड़ौदी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में चानौत में ग्रामीणों की पेयजल की समस्या का समाधान न करने पर रोष प्रकट किया गया। उन्होंने कहा कि प्रदेश के गांवों तक भाखड़ा नहर का पानी पहुंचाने के उद्देश्य से शुरू की गई पाइपलाइन परियोजना का करीब 18 किलोमीटर कार्य पूरा होने के बाद वन विभाग से जुड़े कारणों के चलते काम बीच में ही रुक गया।

नेपाल में भारतीय टीमों का दबदबा

- दक्षिण एशियाई रॉकबॉल में दो स्वर्ण पदक जीत बढ़ाया गौरव

हरिभूमि न्यूज ⏭ चरखी दादरी

चरखी दादरी। विजेता भारतीय टीम के खिलाड़ी। *फोटो: हरिभूमि*

नेपाल की राजधानी काठमांडू में 29 जून से 2 जुलाई तक आयोजित पहली दक्षिण एशियाई सीनियर एवं मिक्स रॉकबॉल चैंपियनशिप 2026 में भारतीय पुरुष और महिला टीमों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए दो स्वर्ण पदक जीतकर देश का गौरव बढ़ाया। कुमारी फुटसल एंड स्नूकर परिसर में आयोजित इस प्रतियोगिता के दौरान भारतीय खिलाड़ियों ने पूरे टूर्नामेंट में उत्कृष्ट खेल का प्रदर्शन करते हुए तिरंगा शान से लहराया। रॉकबॉल अमेच्योर फेडरेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष शिव कुमार और महासचिव भूपेंद्र सांगवान ने संयुक्त रूप से बताया कि भारतीय महिला टीम ने कप्तान साइका खानम (जम्मू-कश्मीर) के नेतृत्व में बेहतरीन तालमेल और दमदार प्रदर्शन किया। टीम में राजस्थान की बबीता गोयल सहित हरियाणा, उत्तर प्रदेश, गुजरात और जम्मू-कश्मीर की खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। सभी खिलाड़ियों ने प्रभावशाली प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम किया। पुरुष वर्ग में कप्तान निशित सिंह राणा (गुजरात) की अगुवाई में भारतीय टीम ने शानदार खेल दिखाते हुए स्वर्ण पदक हासिल किया। फेडरेशन पदाधिकारियों ने कहा कि इस उपलब्धि से रॉकबॉल खेल को नई पहचान मिलेगी । इस अवसर पर फेडरेशन के चेयरमैन डॉ. प्रवीण कुमार, अंतरराष्ट्रीय कोच मनमोहन सेठ, संगठन सचिव प्रदीप कुमार सहित अन्य पदाधिकारियों ने विजेता खिलाड़ियों को बधाई दी।

भाजपा ग्रामीण मंडल की मासिक बैठक संपन्न

भाजपा की प्रदेश अध्यक्षा डॉ. अर्चना गुप्ता आठ को भिवानी के दौरे पर आएंगी

संगठन विस्तार और प्रदेश अध्यक्ष के आगमन की तैयारियों पर महामंथन

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

भिवानी। आयोजित बैठक में उपस्थित भाजपा पदाधिकारी। *फोटो: हरिभूमि*

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन के निर्देशानुसार शनिवार को स्थानीय जिला भाजपा कार्यालय में ग्रामीण मंडल की मासिक बैठक संपन्न हुई। महीने के पहले सप्ताह में आयोजित होने वाली इस नियमित सांगठनिक बैठक की अध्यक्षता ग्रामीण मंडल अध्यक्ष सुनील भारद्वाज धारेडू ने की। बैठक में मुख्य वक्ता के रूप में भाजपा जिला अध्यक्ष विरेन्द्र कौशिक उपस्थित रहे। उनके साथ मंच पर मंडल पालक व हरियाणा अनुसूचित जाति आयोग के वाइस चेयरमैन विजेन्द्र बडगुजर और मंडल प्रभारी राहुल शर्मा भी विशेष रूप से मौजूद रहे। इस बैठक में संगठन की मजबूती, डिजिटल अभियान और आगामी 8 जुलाई को प्रदेश अध्यक्षा डा. अर्चना गुप्ता के भिवानी आगमन को लेकर रणनीतिक चर्चा की गई। बैठक के एजेंडे को स्पष्ट करते हुए मुख्य वक्ता व जिला अध्यक्ष विरेन्द्र कौशिक ने कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। उन्होंने संगठन विस्तार की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि पार्टी की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाना हर कार्यकर्ता का कर्तव्य है। बैठक में मुख्य रूप से एसआईआर फॉर्म के विषय में विस्तृत दिशा-निर्देश दिए नेताओं ने कहा कि तकनीकी रूप से सुदृढ़ होकर ही भाजपा का कार्यकर्ता आज के दौर में विपक्ष को करारा जवाब दे सकता है।

पदाधिकारियों को जिम्मेदारियां सौंपी

आगामी 8 जुलाई को भाजपा की प्रदेश अध्यक्षा डॉ. अर्चना गुप्ता भिवानी के दौरे पर आ रही हैं। इस आगमन को ऐतिहासिक बनाने के लिए बैठक में विशेष रणनीति तैयार की गई। ग्रामीण मंडल के अंतर्गत आने वाले सभी शक्ति केंद्रों और पदाधिकारियों की जिम्मेदारियां तय की गई हैं। सभी प्रभारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे अपने-अपने क्षेत्रों से रिकॉर्ड संख्या में कार्यकर्ताओं और आम जनता को इस कार्यक्रम में लेकर पहुंचें।

आदर्श प्ले स्कूल के विद्यार्थियों ने पौधे लगाकर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

लोहारू। आदर्श प्ले स्कूल के विद्यार्थियों ने शनिवार को पौधारोपण अभियान की शुरुआत करते हुए करीब 100 पौधे लगाए। स्कूल निदेशक जितेंद्र जांगड़ा ने बताया कि इस अभियान के तहत विद्यालय का प्रत्येक विद्यार्थी इस सीजन में एक-एक पौधा अवश्य लगाएगा। इस पौधारोपण अभियान की शुरुआत शनिवार को खंड शिक्षा अधिकारी विजय प्रभा की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम के तहत की गई। बीईओ विजय प्रभा ने विद्यालय प्रबंधन के पौधारोपण अभियान की सराहना की और कहा कि प्रकृति को हरा भरा बनाकर ही हम उसे जीवन अनुकूल बना सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के खास मौकों पर पोधे लगाने चाहिए और उनका पालन पोषण करना चाहिए। स्कूल निदेशक जितेंद्र जांगड़ा ने बताया कि इस सीजन में तीन सौ पौधे लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया तथा विद्यालय का प्रत्येक विद्यार्थी एक पौधा रोपित करेगा। उन्होंने बताया कि नन्हें बच्चों में पर्यावरण के प्रति सजगता की अलख जगा कर हम भविष्य के लिए सुरक्षित पर्यावरण की नींव रख सकते हैं।

खबर संक्षेप

19 वर्षीय युवती लापता केस दर्ज

लोहारू। शहर से एक 19 वर्षीय युवती के लापता होने का मामला प्रकाश में आया है। युवती के पिता की शिकायत पर लोहारू पुलिस ने गुमशुदगी का मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है। शहर वार्ड न. एक निवासी व्यक्ति ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसकी 19 वर्षीय बेटी घर से बिना बताए कहीं चली गई। उसकी काफी तलाश की गई लेकिन वह नही मिली। पुलिस ने गुमशुदगी की शिकायत दर्ज करके उसकी तलाश शुरू कर दी है।

अवैध शराब सहित एक आरोपी को किया गिरफ्तार

भिवानी। थाना शहर पुलिस ने अवैध शराब सहित एक आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है। फिलहाल पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार थाना शहर भिवानी के अंतर्गत पुलिस चौकी जैन चौक के मुख्य सिपाही आजाद अपनी पुलिस टीम के साथ गश्त एवं अपराध रोकथाम ड्यूटी के दौरान हनुमान गेट, भिवानी क्षेत्र में मौजूद थे। इसी दौरान पुलिस टीम को विश्वसनीय सूत्रों से सूचना प्राप्त हुई कि एक व्यक्ति ढाणा रोड पर बिना लाइसेंस अवैध शराब लेकर जा रहा है। सूचना पर त्वरित कार्रवाई करते हुए पुलिस टीम ने बताए गए स्थान पर नाकाबंदी कर एक स्कूटी सवार व्यक्ति को काबू किया। तलाशी लेने पर उसकी स्कूटी से दो पेटी देशी शराब बरामद हुई। पुलिस द्वारा शराब से संबंधित वैध दस्तावेज मांगने पर आरोपी कोई लाइसेंस अथवा दस्तावेज प्रस्तुत नहीं कर सका।

ब्राह्मण खाप 12 की बैठक आयोजित

भिवानी। ब्राह्मण समाज की एकजुटता, सामाजिक सरोकारों और राष्ट्र निर्माण में समाज के ऐतिहासिक योगदान को लेकर शनिवार को गांव खरक कलां में ब्राह्मण खाप 12 की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता ब्राह्मण खाप 12 के प्रधान सुरेश शर्मा ने की, जबकि मंच का संचालन रामकिशन शर्मा द्वारा किया गया। बैठक में खाप के गणमान्य प्रतिनिधियों ने हिस्सा लेकर समाज की वर्तमान स्थिति और उसके गौरवशाली अतीत पर विस्तार से विचार-विमर्श किया।

महिलाओं ने नारेबाजी कर जताया रोष

हनुमान ढाणी में तीन महीनों से पानी का टोटा

हनुमान ढाणी की महिलाओं ने खारा पानी पीने की मजबूरी बताई

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

जनसंघर्ष समिति भिवानी की ओर से कई महीनों से पीने का पानी नहीं आने से स्थानीय हनुमान ढ़ाणी गली नंबर-2 और 3 में आक्रोशित गलिवासियों ने शनिवार को जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अधिकारियों के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन किया तथा उन्हें चेतावनी दी कि यदि उनकी पानी की समस्या का शीघ्र समाधान नहीं किया तो वे उनके विभागीय कार्यालय के सामने अनिश्चितकालीन धरना देने पर मजबूर होंगे।

गली की महिलाओं ने बताया कि पिछले दो महीने से उनके यहां पानी की एक बूंद भी नहीं आ रही है, वे बरमे का खारा पानी पीने के लिए मजबूर है। जिससे मोहल्ले में अनेक बीमारियां पनप रही हैं। वे इस समस्या को लेकर विभाग के उच्च अधिकारियों, एसडीओ, जेई, विधायक, पार्षदों से भी मिल चुकी हैं, परन्तु उनकी पानी सम्बन्धी समस्या का समाधान नहीं हो रहा है और अब उन्हें मजबूरन यह प्रदर्शन करना पड़ रहा है। उधर जनसंघर्ष समिति भिवानी के संयोजक व माकपा जिला सचिव कामरेड ओमप्रकाश ने स्थानीय नागरिकों के निमङ्त्रण पर वहां पहुंचकर गलिवासियों की समस्या के बारे जानकारी ली तथा विभाग के एसडीओ से बात करके उनके समाधान के लिए कहा तो एसडीओ ने वहां दो वाल्व लगाने के लिए कहा है और उसके बाद वहां पानी पहुंचने लगेगा।

परंतु इसमें सप्ताह या 10 दिन लगेंगे, तब तक उनके यहां प्रतिदिन दो टैंकर भिजवाने का आश्वासन दिया है। प्रदर्शन में शामिल होने वालों में मामनराम, मोहनलाल शर्मा, अंगूरी, ममता, अनिता, सुमन, लीला, मंजू, पार्वती, सुमन, संतोष, संतरा, मूर्ति, दीपक, महिपाल, बिमला, गीता व पूजा शामिल रही।

भिवानी। पानी की मांग को लेकर नारेबाजी करते हुए। *फोटो : हरिभूमि*

नहर में पानी बढ़ाने की मांग

कामरेड ओमप्रकाश ने कहा कि पूरे शहर व गांवों में पीने के पानी के लिए हाहाकार मचा हुआ है। उन्होंने सिंचाई मंत्री श्रुति चौधरी से मांग की है कि जब 42 दिनों में नहर में पानी आता है तो कम से कम एक सप्ताह तो पानी चलना ही चाहिए, ताकि शहर व गांव के सभी टैंक व तालाब पानी से भर सकें। दादरी डिस्ट्रीब्यूटरी से सांगा माईनर में केवल दो दिन भी पानी नहीं चलता है और कायला, बडाला, सांगा, बामला, उमरावत, पूर्णपुरा, नांगल गांव में पीने के पानी के लिए हाहाकार मचा हुआ है। उधर शहर में भी अनेक कालोनियों में पीने का पानी नहीं आ रहा है। विभाग के अधिकारी इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कर पा रहे हैं। यह ट्रिपल इंजन की सरकार लोगों के प्रति संवेदन हीन हो गई है और लोगों को उनके हाल पर छोड़ दिया है। उन्होंने कहा कि वे स्वयं 8 जून को हनुमान ढ़ाणी गली 2-3 की पीने के पानी की समस्या को लेकर उपायुक्त समाधान शिविर में भी गये थे, परन्तु विभाग द्वारा समाधान के आश्वासन के बाद भी एक महीना बीतने के बाद भी इस संबंध में कुछ नहीं किया।

कबीर जयंती की तैयारियां जोरों पर

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

5 जुलाई को होने वाली संत शिरोमणि कबीर दास की जयंती की तैयारी जोरों पर चल रही है आज कमेटी सदस्यों ने पंचायत भवन जयंती समारोह सभा स्थल का निरीक्षण किया और जयंती का अंतिम रूप दिया जयंती समारोह में प्रदेश के कैबिनेट मंत्री डॉ अरविंद शर्मा मुख्य अतिथि होंगे कार्यक्रम की अध्यक्षता संत कबीर धानक महासभा के प्रदेश अध्यक्ष पूर्व जिला पार्षद अजीत सिंह बामला करेंगे कार्यक्रम के संयोजक यूथ डीएससी समाज के अध्यक्ष धर्मवीर डाबला होंगे धानक जनकल्याण मंच प्रदेश अध्यक्ष एवं जयंती के मीडिया प्रभारी संदीप खरकिया ने बताया जयंती समारोह की तैयारी पूरी कर ली गई है जयंती में भिवानी ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र से समाज के बुद्धिजीवी लोग महिलाएं युवा आदि भारी संख्या में शिरकत करेंगे।

भिवानी। कार्यक्रम को लेकर तैयारियों का जायजा लेते हुए। *फोटो : हरिभूमि*

ये रहे मौजूद

संदीप खरकिया ने बताया कि जयंती समारोह में भिवानी के सांसद चौधरी धर्मवीरसिंह, विधायक घनश्याम दास, विधायक कपूर वाल्मीकि, पूर्व मंत्री विशंभर वाल्मीकि, पूर्व विधायक शशिरंजन परमार, भिवानी जिला अध्यक्ष नरेंद्र कौशिक, महिला आयोग की अध्यक्ष मीना परमार, नगर परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि भवानी प्रताप ,आदि संबोधित करेंगे इस मौके पर रामेश्वर गोलागढ़,अजीत बामला , धर्मवीर डाबला,प्यारेलाल कायत करतार सिंह बडेसरा, निहाल सिंह सोलंकी, संदीप खरकिया, ईश्वर सोलंकी , बजरंग गुजरानी, राजकरण नगर आदि थे।

गुलाब सिंह सैनी के जन्मदिवस पर आज लगेगा रक्तदान शिविर

भिवानी। नवदुर्गा सेवा सहयोग संस्था (रजि.) भिवानी एवं श्री नंदलाल चावला मेमोरियल ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में एशिया कबड्डी फेडरेशन के चेयरमैन गुलाब सिंह सैनी के जन्मदिवस पर आज 5 जुलाई (रविवार) प्रातः 8:00 बजे मिनी बाईपास, कदम हॉस्पिटल के सामने स्थित भिवानी ब्लड सेंटर में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। संस्था के मीडिया कोऑर्डिनेटर सुरेश सैनी ने बताया कि शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में देवसर धाम के मुख्य पुजारी कंवरपाल उपस्थित रहेंगे।

कांग्रेस नेता कमल प्रधान व अशोक मलिक ने हरियाणा कांग्रेस प्रभारी से की मुलाकात

हरिभूमि न्यूज ⏭ तोशाम

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कमल सिंह प्रधान और अशोक मलिक ने दिल्ली स्थित के इंदिरा भवन में हरियाणा कांग्रेस प्रभारी से औपचारिक मुलाकात की। इस दौरान नेताओं ने हरियाणा प्रदेश में कांग्रेस पार्टी की वर्तमान स्थिति, संगठनात्मक मजबूती तथा प्रदेश से जुड़े अहम जनहित मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की। बैठक में आगामी राजनीतिक रणनीति, कार्यकर्ताओं की भूमिका और जनता से जुड़े विभिन्न विषयों को लेकर विचार-विमर्श किया गया। कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं कमल सिंह प्रधान और अशोक मलिक ने दिल्ली स्थित के ने प्रदेश में संगठन को और अधिक मजबूत करने तथा जनता की आवाज को प्रभावी ढंग से उठाने की प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी प्रदेश के हर वर्ग के हितों की लड़ाई मजबूती से लड़ती रहेगी और जनसमस्याओं के समाधान के लिए निरंतर प्रयासरत रहेगी।

तोशाम। कांग्रेस के हरियाणा प्रभारी से मुलाकात करते हुए। *फोटो : हरिभूमि*

सरस्वती विद्या मंदिर की छात्रा अंतिमा ने सीए फाउंडेशन परीक्षा उत्तीर्ण की

हरिभूमि न्यूज ⏭ चरखी दादरी

गांव कादमा स्थित सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ने शिक्षा के क्षेत्र में एक और उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। विद्यालय की वाणिज्य संकाय सत्र 2025-26 की छात्रा कुमारी अंतिमा सुपुत्री सत्यवान निवासी गांव कारी मेला ने विद्यालय में प्राप्त मार्गदर्शन के आधार पर सीए फाउंडेशन परीक्षा उत्तीर्ण कर विद्यालय और क्षेत्र का नाम रोशन किया है। इस उपलब्धि पर विद्यालय परिवार तथा क्षेत्रवासियों में हर्ष का माहौल है। विद्यालय के निदेशक मुन्नालाल शर्मा, प्राचार्या निशा शर्मा एवं सचिव महेश शर्मा ने कहा कि विद्यालय पिछले 40 वर्षों से उत्कृष्ट शिक्षा, संस्कार और शालीनता के मूल्यों के साथ कार्य कर रहा है। इन आदर्शों से किसी भी परिस्थिति में समझौता नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रत्येक वर्ग के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण एवं उच्च शिक्षा उपलब्ध कराना विद्यालय का प्रमुख उद्देश्य है। विद्यालय ने समय-समय पर देश को एमबीबीएस, आईआईटी, नीट, जेईई, पीओ, इसरो अभियंता, व्याख्याता और प्रवक्ता जैसे प्रतिष्ठित पदों पर सेवाएं देने वाले अनेक प्रतिभाशाली विद्यार्थी दिए हैं।

चरखी दादरी। छात्रा को सम्मानित करते हुए स्टाफ सदस्य व गणमान्य नागरिक।

बॉक्सिंग में जिया और हर्ष ने जीते कांस्य पदक

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

विद्यांतरिक्ष सीनियर सेकेंडरी स्कूल के विद्यार्थियों ने शिक्षा के साथ-साथ खेल जगत में भी विद्यालय और क्षेत्र का नाम राष्ट्रीय स्तर पर रोशन किया है। इसी कड़ी में, विद्यालय की कक्षा 7वीं की होनहार छात्रा जिया ने जालंधर (पंजाब) में आयोजित 5वीं (अंडर-15) सब-जूनियर नेशनल बॉक्सिंग चैंपियनशिप 2026 में शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक (ब्रॉन्ज मेडल) अपने नाम किया है। गौरतलब है कि इससे पहले जिया ने ताशकंद (उज़्बेकिस्तान) में आयोजित एशियन बॉक्सिंग चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए कांस्य पदक जीतकर देश का गौरव बढ़ाया था। अब राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भी पदक जीतकर उसने एक बार फिर अपनी प्रतिभा और निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन का परिचय दिया है। वहीं, विद्यालय के कक्षा 7वीं के एक और प्रतिभाशाली छात्र हर्ष ने कुरुक्षेत्र में 9-10 जून को आयोजित 14वीं हरियाणा स्टेट पेंचक सिलाट चैंपियनशिप 2026-27 में शानदार प्रदर्शन करते हुए राज्य स्तर पर कांस्य पदक हासिल किया है। दोनों खिलाड़ियों ने अपनी इस उपलब्धि से अपने माता-पिता, विद्यालय और पूरे जिले का नाम गौरवान्वित किया है।

भिवानी। पदक विजेताओं को सम्मानित करते हुए। *फोटो : हरिभूमि*

खिलाड़ियों पर गर्व

इस शानदार सफलता पर स्कूल के निदेशक कर्ण मिर्ग व ऐकडेमिक हेड मुकेश कुमार ने दोनों खिलाड़ियों को बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हमें अपने इन होनहार खिलाड़ियों पर गर्व है। हमारी कामना है कि ये बच्चे भविष्य में भी देश के लिए अनेक पदक जीतें और शिक्षा के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करते रहें। उन्होंने कहा कि विद्यांतरिक्ष स्कूल अपनी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों के उत्कृष्ट समन्वय के कारण शहर में एक विशिष्ट पहचान बना चुका है तथा निरंतर नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

निर्माण एवं विकास परियोजनाओं के लिए ऑनलाइन पंजीकरण अनिवार्यः डीसी

भिवानी। डीसी साहिल गुप्ता ने बताया कि हरियाणा में निर्माण एवं विकास गतिविधियों से जुड़े सभी परियोजना प्रस्तावकों, फैक्ट्रियों, बिल्डरों, कॉलोनाइजरों तथा वाणिज्यिक उपक्रमों के लिए ऑनलाइन आवेदन एवं स्वयं-मूल्यांकन (सेल्फ असेसमेंट) के लिए निर्धारित वेब पोर्टल पर पंजीकरण करवाना अनिवार्य किया गया है। डीसी ने हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (एचएसपीसीबी) के क्षेत्रीय अधिकारी शैलेंद्र अरोड़ा को निर्देश दिए हैं कि वे निर्देशों की पालना करवाना सुनिश्चित करें। डीसी ने बताया कि हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा प्रदूषण नियंत्रण के उद्देश्य से आयोग के 11 जून 2021 के निर्देशों की अनुपालना में निर्माण परियोजनाओं के लिए विकसित किया गया है। सभी पात्र परियोजना प्रस्तावकों को इस पोर्टल पर स्वयं प्रदूषण मूल्यांकन एवं धूल नियंत्रण संबंधी जानकारी ऑनलाइन भरना अनिवार्य होगा। उन्होंने बताया कि राज्य में 500 वर्ग मीटर या उससे अधिक क्षेत्रफल पर प्रस्तावित अथवा संचालित सभी मौजूदा एवं आगामी निर्माण और विकास परियोजनाओं को निर्माण कार्य शुरू करने से पहले इस वेब पोर्टल पर अनिवार्य रूप से पंजीकरण कराना होगा।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8814999151, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10× 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज़ पर मान्य। अन्य किसी साईज़ के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

शिक्षक सम्मान समारोह में 65 विषय विशेषज्ञ शिक्षक सम्मानित

चरखी दादरी। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की दसवीं एवं बारहवीं कक्षाओं के परीक्षा परिणाम में प्रदेशभर में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले चरखी दादरी जिले की ऐतिहासिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले 65 विषय विशेषज्ञ शिक्षकों को पीएमश्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, चरखी दादरी में आयोजित जिला स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में प्रशंसा-पत्र एवं पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला शिक्षा अधिकारी धर्मेन्द्र चौधरी ने कहा कि जिले की यह उपलब्धि शिक्षा विभाग की सुनियोजित रणनीति, विषय विशेषज्ञ शिक्षकों की मेहनत और सामूहिक प्रयासों का परिणाम है।

वृक्ष बचाएं, पर्यावरण संवारें

- सेशन जज डॉ. गगनदीप कौर सिंह ने पौधरोपण कर रैली को दिखाई हरी झंडी, विद्यार्थियों से एक-एक पौधे के संरक्षण का लिया संकल्प

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशानुसार पर्यावरण संरक्षण एवं जन-जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, भिवानी के मार्गदर्शन में लिटिल हार्ट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल में शनिवार को भव्य वृक्षारोपण एवं पर्यावरण जागरूकता अभियान आयोजित किया गया। अभियान के तहत पौधारोपण के साथ पर्यावरण संरक्षण रैली भी निकाली गई, जिसमें सैकड़ों विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर हरित भविष्य का संदेश दिया। अपने संबोधन में जिला एवं सत्र न्यायाधीश डॉ. गगनदीप कौर सिंह ने कहा कि वृक्ष मानव जीवन का आधार हैं। स्वच्छ वायु, शुद्ध जल, जलवायु संतुलन और पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिक से अधिक वृक्ष लगाना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि केवल पौधे लगाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनकी नियमित देखभाल और संरक्षण करना भी प्रत्येक नागरिक का नैतिक दायित्व है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कम से कम एक पौधा लगाकर उसकी जिम्मेदारी निभाए, तो आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ, हरित और सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराया जा सकता है।

भिवानी। स्कूल परिसर में पौधारोपित करते हुए। *फोटो : हरिभूमि*

हर पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में होना जरूरीः प्रदीप कुमार

- रेडक्रॉस भवन में एसआईआर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन, युवाओं को दिलाई राष्ट्र निर्माण की शपथ

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

जिला रैडक्रॉस सोसायटी के अध्यक्ष एवं डीसी साहिल गुप्ता के मार्गदर्शन तथा जिला रैडक्रॉस सोसायटी के सचिव प्रदीप कुमार के नेतृत्व में स्थानीय रैडक्रॉस भवन में विशेष मतदाता सूची गहन पुलनिरीक्षण (एसआईआर) अभियान के अंतर्गत जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों से आए युवाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला रैडक्रॉस सोसायटी के सचिव प्रदीप कुमार ने कहा कि एसआईआर यानी मतदाता सूची विशेष गहन पुनर्निरीक्षण का कार्य मतदाता सूची को अधिक सटीक, पारदर्शी और समावेशी बनाने की एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इस अभियान की मुख्य विशेषता यह है कि इसके तहत हर एक पात्र व्यक्ति का नाम मतदाता सूची में शामिल किया जाएगा, जबकि अपात्र व्यक्तियों के नाम हटाए जाएंगे। यह प्रक्रिया उन मतदाताओं के विवरणों की बारीकी से जांच करेगी, जिनका डेटा पिछली मतदाता सूची से मेल नहीं खाता है। सचिव प्रदीप कुमार ने युवाओं और महिलाओं की भागीदारी पर जोर देते हुए आगे कहा कि रेडक्रॉस सोसायटी केवल स्वास्थ्य और समाज सेवा तक सीमित नहीं है, बल्कि राष्ट्र निर्माण के हर महत्वपूर्ण स्तंभ में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रही है।

10 करोड़ 20 लाख की ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में नए रोड निर्माण की राशि मंजूर

राष्ट्र निर्माण में ब्राह्मण समाज का योगदान हमेशा से अतुलनीय : रामकिशन शर्मा

- परशुराम चौक से रोहतक रोड तक बनेगा 3 करोड़ की लागत से नया रोड़

हरिभूमि न्यूज ⏭ चरखी दादरी

हरियाणा सरकार ने चरखी दादरी विधानसभा क्षेत्र के शहरी और ग्रामीण इलाकों के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए एक बड़ा कदम उठाया है। क्षेत्र के विधायक सुनील सांगवान ने इस ऐतिहासिक विकास कार्य की जानकारी देते हुए बताया कि सरकार द्वारा लोक निर्माण विभाग के तहत ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में नए रोड निर्माण तथा सुदृढ़ीकरण के लिए कुल 10 करोड़ 20 लाख रुपए की भारी-भरकम राशि मंजूर की गई है। इस विशेष बजट से क्षेत्र में लगभग साढ़े 15 किलोमीटर लंबी कुल 10 सड़कों का कायाकल्प किया जाएगा।

चरखी दादरी। लोगों से बातचीत करते विधायक सुनील सांगवान। *फोटो : हरिभूमि*

सड़कों के लिए करोड़ों मंजूर

विधायक सुनील सांगवान ने शनिवार को दादरी कैंप कार्यालय में जन समस्याएं सुनी और निर्देश बारे अधिकारियों को निर्देश दिए। वहीं विधायक सुनील सांगवान ने बताया कि हाल ही में प्रदेश की नायब सरकार द्वारा ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में नये रोड निर्माण की राशि मंजूर की है। इस योजना के तहत शहर के सबसे व्यस्त मार्ग परशुराम चौक से तिकोना पार्क (रोहतक रोड) तक के मार्ग के पुनर्निर्माण के लिए करीब 3 करोड़ का बजट अकेले स्वीकृत किया गया है। करीब 1.15 किलोमीटर लंबे इस मार्ग के बनने से स्थानीय निवासियों, राहगीरों और व्यापारियों को जाम तथा जर्जर सडक की समस्या से हमेशा के लिए निजात मिल जाएगी। सुनील सांगवान ने बताया कि मुख्यमंत्री द्वारा दादरी विधानसभा क्षेत्र की सडकों की मजबूती के लिए इस प्रशासनिक मंजूरी से विकास को नई गति मिलेगी। इसके तहत समसपुर से खातीवास रोड की शिफ्टिंग व मजबूतीकरण के लिए 1.95 करोड़ रुपए, ढाणी फोगाट पहुंच मार्ग के लिए 2.66 करोड़ रुपए और अचीना से बिगोवा मार्ग के 6.23 किलोमीटर हिस्से को मजबूत करने के लिए 1.28 करोड़ रुपए आवंटित किए गए हैं। इसके अलावा बौंद कलां से मालपोस, घिकाड़ा स्कूल रोड, रानीला बाईपास, सरूपगढ़ से संतोड़, कान्हेटी से भागवी और मालपोस स्कूल एप्रोच रोड पर भी निर्माण कार्य को हरी झंडी मिल गई है।

बार एसो. ने अधिवक्ताओं का किया सम्मान

चरखी दादरी। चरखी दादरी बार एसोसिएशन द्वारा शनिवार को बार परिसर स्थित लाइब्रेरी हॉल में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बार एसोसिएशन के प्रधान अधिवक्ता सुरेंद्र मेहड़ा ने की। समारोह में अधिवक्ताओं ने वरिष्ठ अधिवक्ता एवं हरियाणा वेयर हाउसिंग कॉर्पोरेशन के चेयरमैन रामकिशन शर्मा को इस महत्वपूर्ण दायित्व पर नियुक्त होने पर सम्मानित किया गया। युवा अधिवक्ता हिमांशु भगत, एडवोकेट विकास कलकल, एडवोकेट राकेश सांगवान व एडवोकेट शशीकांत को लेह-लद्दाख की दुर्गम एवं ऊंची पर्वतीय चोटियों तक पहुंचकर साहस, दृढ़ संकल्प एवं उत्कृष्ट उपलब्धि हासिल करने पर विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

क्या कभी हो पाएगी एलियन से मुलाकात !

क्या एलियन कभी पृथ्वी पर आएंगे? क्या उनसे हमारी मुलाकात हो पाएगी? इस सवाल का फिलहाल कोई सीधा 'हां' या 'ना' में जवाब देना मुश्किल है। एलियंस का धरती पर आना भले ही अभी विज्ञान कथाओं की तरह लगता हो, लेकिन वैज्ञानिक प्रयासों से भविष्य में, असंभव सा लगने वाला कुछ भी संभव हो सकता है।

कवर स्टोरी

शिखर चंद जैन

रात के समय जब हम आसमान में टिमटिमाते हुए तारों को देखते हैं, तो हमारे मन में एक सवाल बार-बार उठता है, 'क्या इस विशाल ब्रह्मांड में हम अकेले हैं?' या फिर किसी दूर के ग्रह पर हमारे जैसे ही या हमसे भी ज्यादा समझदार जीव रहते हैं? इन्हीं बाहरी दुनिया के जीवों को हम 'एलियन' या 'एक्स्ट्राटेरेस्ट्रियल' कहते हैं। गणितीय संभावनाओं को देखें तो ब्रह्मांड में कहीं न कहीं जीवन जरूर होना चाहिए। लेकिन अंतरिक्ष की असीम दूरियों को देखते हुए, उनका हमारे पास आना या हमारा उन तक पहुंचना बहुत ही कठिन काम है। वैज्ञानिकों का मानना है कि आने वाले कुछ दशकों में, जैसे-जैसे हमारी तकनीक और बेहतर होगी, हम शायद सौर मंडल के किसी चांद या बाहरी ग्रह पर जीवन के छोटे अंश (जैसे बैक्टीरिया) खोजने में सफल हो जाएंगे।

क्यों बरकरार है संभावना

वैज्ञानिकों के अनुसार, हमारे ब्रह्मांड में अरबों आकाशगंगाएं हैं और हर आकाशगंगा में खरबों तारे और ग्रह हैं। इतनी बड़ी जगह में सिर्फ हमारी पृथ्वी पर ही जीवन हो, ऐसा होना थोड़ा मुश्किल लगता है। इसलिए लगता है कि इस यूनिवर्स में कोई न कोई दूसरी दुनिया हो सकती है। खगोल वैज्ञानिक भी इस विषय पर यही सोचते हैं। इसीलिए वे सालों से एलियंस की खोज कर रहे हैं।

क्या एलियन पृथ्वी पर आएंगे!

हालांकि आम लोगों का मानना है कि कभी न कभी एलियन पृथ्वी पर आए होंगे या आएंगे। लेकिन वैज्ञानिक इस सवाल का जवाब तर्क के आधार पर खोजते हैं। एलियन पृथ्वी पर क्यों आना चाहेंगे? इसके वे कई तर्क देते हैं-

नए घर की खोज: जैसे हमारे वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर जीवन तलाश रहे हैं, वैसे ही एलियन भी अपने रहने के लिए एक नए और सुरक्षित ग्रह की तलाश में पृथ्वी पर आ सकते हैं।

संसाधनों की तलाश: अगर उनके अपने ग्रह के प्राकृतिक संसाधन जैसे पानी, खनिज या ऊर्जा आदि खत्म हो गए हों, तो वे पृथ्वी के संसाधनों का उपयोग करने के लिए यहां का रुख कर सकते हैं।

जिज्ञासा और शोध: हो सकता है कि एलियन भी हमारी पृथ्वी के वैज्ञानिकों की तरह खोजी स्वभाव के हों। वे ब्रह्मांड के दूसरे जीवों यानी हम इंसानों के बारे में जानने और हमसे दोस्ती करने के लिए हमारे पास आ सकते हैं।

तकनीकी श्रेष्ठता: अगर कोई सभ्यता हमसे लाखों साल पुरानी है, तो उनके पास ऐसे स्पेसशिप हो सकते हैं जो रोशनी की रफ्तार से भी तेज चल सकें। ऐसी तकनीक होने पर उनके लिए पृथ्वी तक आना बहुत आसान होगा।

इसके विपरीत एलियन का आना क्यों मुश्किल है, इसके भी कुछ तर्क देते हैं-

अत्यधिक दूरी: ब्रह्मांड इतना बड़ा है कि हमारे सबसे करीबी तारे प्रॉक्सिमा सेंचुरी तक पहुंचने में भी आज की तकनीक से हजारों साल लग जाएंगे। एलियंस के लिए भी इतनी लंबी दूरी तय करना एक बड़ी चुनौती होगी।

समय का चक्र: हो सकता है कि ब्रह्मांड के किसी कोने में एलियन रहे हों, लेकिन वे इंसानों के पैदा होने से करोड़ों साल पहले ही खत्म हो चुके हों, या फिर वे तब आएंगे, जब इंसान धरती से गायब हो चुके होंगे।

संवाद की कमी: हमारी भाषा, रेडियो सिग्नल और सोचने का तरीका उनसे बिल्कुल अलग हो सकता है। मुमकिन है कि वे हमारे सिग्नलों को समझ ही न पा रहे हों।

वैज्ञानिक शोध और प्रयास

वैज्ञानिकों ने एलियंस को ढूंढ़ने और उनसे संपर्क करने के लिए कई प्रयास किए हैं।

सेटी प्रोजेक्ट: सर्च फॉर एक्स्ट्रा टेरेस्ट्रियल इंटेलिजेंस, दुनिया का सबसे बड़ा संगठन है, जो अंतरिक्ष से आने वाले रहस्यमयी सिग्नलों पर नजर रखता है। वैज्ञानिक बड़े-बड़े रेडियो टेलीस्कोप का इस्तेमाल करके आसमान से आने वाली आवाजों और तरंगों को सुनते हैं, ताकि एलियंस का कोई संदेश पकड़ा जा सके।

वोयाजर के गोल्डन रिकॉर्ड्स: साल 1977 में नासा ने अंतरिक्ष में दो स्पेसक्राफ्ट भेजे थे, जिनका नाम 'वोयाजर 1' और 'वोयाजर 2' है। इन स्पेसशिप में एक तांबे की बनी सीडी जैसी 'गोल्डन डिस्क' रखी गई है। इस डिस्क में पृथ्वी की आवाजें, संगीत, 55 भाषाओं में नमस्कार और हमारे ग्रह का नक्शा दर्ज है, ताकि अगर कभी यह किसी एलियन को मिले, तो वे हमारे बारे में जान सकें।

यूएफओ और यूएपी की जांच: दुनिया भर में कई बार आसमान में उड़ने वाली अजीबो-गरीब चीजों जैसे उड़न तश्तरी को देखने का दावा किया गया है। अब अमेरिकी सरकार और नासा जैसी एजेंसियां इन्हें 'यूएपी' (अनआइडेंटिफाइड एनोमैलुअस फैनोमेना) कहकर इन पर आधिकारिक रिसर्च कर रही हैं, ताकि यह साफ हो सके कि ये एलियंस के यान हैं या कोई प्राकृतिक घटना।

बहरहाल, भविष्य में कभी दूसरे ग्रह के वासियों एलियंस से पृथ्वीवासियों की कभी मुलाकात हो पाएगी या नहीं यह तो अभी नहीं कहा जा सकता लेकिन दुनिया भर के वैज्ञानिक इस कोशिश में हर संभव प्रयास कर रहे हैं। *

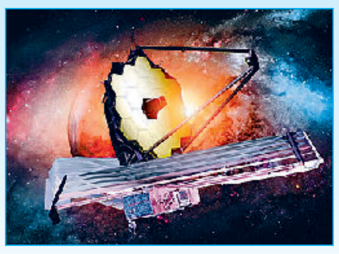

केपलर-जेम्स वेब टेलीस्कोप

नासा के इन आधुनिक टेलीस्कोपों का काम अंतरिक्ष में 'एक्सोप्लैनेट्स' यानी हमारे सौर मंडल से बाहर के ग्रह को खोजना है। वैज्ञानिकों ने अब तक हजारों ऐसे ग्रह खोजे हैं, जो 'गोल्डीलॉक्स जोन' में हैं। इसका मतलब है कि ये ग्रह अपने तारे से न तो बहुत ज्यादा गर्म हैं और न ही बहुत ज्यादा ठंडे, जहां पृथ्वी की तरह पानी और जीवन मौजूद हो सकता है। इसमें जीवन की संभावना भी हो सकती है।

मार्स मिशन

हमारे सबसे नजदीकी ग्रह मंगल पर पानी और जीवन के निशान खोजने के लिए भारत का 'मंगलयान', नासा के 'परसवेरेंस' रोवर जैसे कई मिशन भेजे गए हैं। इनके जरिए वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर सूक्ष्मजीवों के जीवाश्म ढूंढ़ रहे हैं, जो अंतरिक्ष वासी एलियन या जीवन का पहला ठोस सबूत हो सकते हैं।

चिंताजनक है लगातार बढ़ता अंतरिक्ष में वेस्ट मैटर

जिस तरह से हम सबने अपनी पृथ्वी पर प्रदूषक वस्तुओं और कूड़े-कचरे का अंबार लगा रखा है, कुछ ऐसा ही हाल अंतरिक्ष का भी होता जा रहा है। स्पेस में स्पेसक्राफ्ट, एस्ट्रोनॉट्स और सैटेलाइट्स का वेस्ट मैटर भविष्य में गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

स्पेस इश्यू

अंजू जैन

जब हम रात में आसमान की तरफ देखते हैं, तो हमें टिमटिमाते तारे, चंद्रमा और कभी-कभी गुजरते हुए सैटेलाइट्स (उपग्रह) दिखाई देते हैं। यह नजारा बेहद जादुई लगता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि हमारे इस खूबसूरत अंतरिक्ष में एक बहुत बड़ी मुसीबत धीरे-धीरे पैर पसार रही है? इस मुसीबत का नाम है-'अंतरिक्ष का कचरा' या 'स्पेस डेब्री'।

क्या है स्पेस डेब्री: जैसे हम अपनी पृथ्वी पर प्लास्टिक, रैपर्स और खराब सामान फेंककर इसे गंदा कर रहे हैं, ठीक वैसे ही इंसानों ने अंतरिक्ष को भी कबाड़खाना बनाना शुरू कर दिया है। अंतरिक्ष कचरा या स्पेस जंक उन सभी मानव-निर्मित बेकार चीजों को कहते हैं, जो अब किसी काम की नहीं रहीं और पृथ्वी के चारों ओर अंतरिक्ष में चक्कर काट रही हैं। इस कचरे में बेकार हो चुके पुराने सैटेलाइट्स, रॉकेट्स के छूटे हुए टुकड़े, अंतरिक्ष यात्रियों के हाथ से छूटे हुए औजार (जैसे स्क्रू-ड्राइवर, ग्लव्स) और सैटेलाइट्स के आपस में टकराने से बने करोड़ों छोटे-छोटे टुकड़े शामिल हैं। वैज्ञानिकों के अनुमान के अनुसार, इस समय अंतरिक्ष में लाखों छोटे-बड़े टुकड़े तैर रहे हैं, जो एक बड़े खतरे की घंटी हैं।

स्पेस डेब्री में शामिल चीजें: स्पेस डेब्री में बहुत कुछ हो सकता है। जैसे-जब किसी उपग्रह का जीवनकाल खत्म हो जाता है या उसका ईंधन समाप्त हो जाता है, तो वह वहीं अंतरिक्ष में निष्क्रिय होकर घूमने लगता है। उपग्रहों को अंतरिक्ष में छोड़ने के बाद रॉकेट के निचले और ऊपरी हिस्से अलग हो जाते हैं। ये हिस्से अंतरिक्ष में ही तैरते रह जाते हैं। जब दो सैटेलाइट्स आपस में टकराते हैं, तो उनके परखच्चे उड़ जाते हैं। एक टक्कर से हजारों नए छोटे-छोटे तीखे टुकड़े बन जाते हैं।

कुछ देश अपनी मिसाइल क्षमता को जांचने के लिए अंतरिक्ष में अपने ही पुराने सैटेलाइट को मिसाइल से उड़ा देते हैं। इससे पल भर में बेशुमार कचरा फैल जाता है।

स्पेस वेस्ट से संकट: अब आप सोच रहे होंगे कि अंतरिक्ष तो इतना विशाल है, फिर वहां थोड़े से कबाड़ से क्या फर्क पड़ता है? अंतरिक्ष हमारा भविष्य है। अगर आज हमने इसकी सफाई पर ध्यान नहीं दिया, तो आने वाली पीढ़ी के लिए ब्रह्मांड के रहस्य जानने के सारे रास्ते बंद हो जाएंगे। इसके कई खतरनाक परिणाम हो सकते हैं। अंतरिक्ष में ये टुकड़े धीरे-धीरे नहीं तैरते। इनकी रफ्तार बंदूक की गोली से भी 10 से 15 गुना तेज होती है, लगभग 28,000 किलोमीटर प्रति घंटा। इतनी रफ्तार में एक छोटा-सा पेंट का टुकड़ा या पेंच भी किसी सैटेलाइट से टकराए, तो उसे पूरी तरह तबाह कर सकता है। इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन में हमेशा हमारे वैज्ञानिक रहते हैं। यदि कोई बड़ा टुकड़ा स्पेस स्टेशन से टकरा जाए, तो वहां रहने वाले अंतरिक्ष यात्रियों की जान पर बन आ सकती है। उन्हें कई बार खुद को बचाने के लिए आपातकालीन कैप्सूल में छिपना पड़ता है।

हम मोबाइल के जरिए जो बात करते हैं, जीपीएस से रास्ता देखते हैं, टीवी देखते हैं और मौसम का पूर्वानुमान लगाते हैं, वे सब अंतरिक्ष में मौजूद सैटेलाइट्स की वजह से संभव होता है। अगर कचरे की वजह से ये सैटेलाइट्स नष्ट हो गए, तो हमारी पृथ्वी की आधुनिक लाइफलाइन एकदम रुक-सी जाएगी। अगर अंतरिक्ष में कचरा बहुत ज्यादा बढ़ गया, तो वे आपस में टकराकर और अधिक कचरा बनाएंगे। एक समय ऐसा आएगा कि पृथ्वी के चारों ओर कचरे की ऐसी घनी दीवार बन जाएगी कि इंसान कभी नया रॉकेट या सैटेलाइट अंतरिक्ष में भेज ही नहीं पाएगा। हम हमेशा के लिए पृथ्वी पर कैद हो जाएंगे।

निदान और समाधान: अंतरिक्ष में बढ़ रहे कचरे की इस समस्या के समाधान के लिए वैज्ञानिक लगातार प्रयास कर रहे हैं। दुनिया भर की स्पेस एजेंसियां जैसे भारत की इसरो, अमेरिका की नासा इस मलबे को साफ करने के लिए बेहद अनोखे तरीकों पर काम कर रही हैं। वैज्ञानिक ऐसे विशेष सैटेलाइट बना रहे हैं, जो अंतरिक्ष में जाकर बड़े मलबे पर जाल फेंकेंगे या हारपून (भाला) मारकर उसे पकड़ेंगे और खींचकर पृथ्वी के वायुमंडल की तरफ ले आएंगे।

कुछ जापानी कंपनियां ऐसे सैटेलाइट्स का परीक्षण कर रही हैं, जिनमें बहुत शक्तिशाली चुंबक लगे होंगे। ये चुंबक लोहे और धातु के मलबे को अपनी ओर आकर्षित करके चिपका लेंगे। इस तरह कई और तकनीकें अपनाई जा रही हैं। संभव है इसका स्थायी समाधान खोज लिया जाएगा। *

गजल

हबीब कैफी

चला गया कोई

उम्र अपनी बढ़ा गया कोई
नाम लेते ही आ गया कोई
मैंने थामा था हाथ कांटों में
फूल पाकर छुड़ा गया कोई
उसके सारे निशान जिंदा हैं
कैसे कह दूं चला गया कोई
इक तने पर लिखे थे बरसों से
नाम दोनों मिटा गया कोई
नींद यूं ही नहीं हुई गायब
तेरे किस्से सुना गया कोई
सिर्फ इक बात मैंने पूछी थी
बातें क्या-क्या सुना गया कोई
जिक्र जब भी वफा का आया है
सर झुका कर चला गया कोई

व्यंग्य / सूर्यकुमार पांडेय

महंगाई से मुलाकात

चाहने को हम भी बहुत कुछ चाहते हैं। हमारी पहली चाहत तो यह ही है कि अपने पास अकूत वैध संपत्ति हो। वैध इसलिए, क्योंकि बुल्डोजर से सबको डर लगता है। बड़े-बड़े मुर्गे हलाल हो गए, फिर भला इस पिद्दी के शोरबे की क्या ही औकात है? हमारी दूसरी चाहत है कि महंगाई नाम की चीज को अपने देश से धक्के मार कर बाहर निकाल देना चाहिए। अंतर्मन में कुछ ऐसी भी चाहतें हैं, जिन्हें सार्वजनिक कर दें तो जूते पड़ने लगेंगे। हमारे एक मित्र ने एक महिला को सिर्फ 'आइ लव यू' कहा था। एक वह दिन था और एक आज का दिन है, अस्पताल से लौटकर आया है और प्रत्येक महिला को बुआ-दीदी से नीचे नहीं बोलता है।

इंसान कामनाओं का कोष है। मनुष्य की इच्छाएं अनंत हैं। सबको फेसबुक-एक्स आदि के दरिया में डालकर अपनी भड़ास निकालने से अच्छा है कि भाग्यवादी बन जाओ। 'जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिए।' हम भी रह ही रहे हैं। घोर महंगाई की चपत खाकर भी हंस रहे हैं। यूं किसी के चाहने या न चाहने से क्या होता है? भला मैं भी कहां चाहता था, फिर भी आज महंगाई से मेरी मुलाकात हो ही गई। वैसे यह कोई नई बात नहीं है। पहले कभी-कभार भेंट होती थी। इन दिनों वह मुझसे रोज ही किसी-न-किसी बहाने मेरे घर पर मिलने आ जाया करती है। जब मैं घर से बाहर रहता हूं तो वह वहां पर भी मुझसे टकरा जाती है। बाजार जाऊं तो वहां भी मिल जाती है। सड़क पर चल रहा होता हूं, तब भी वह हमारा पीछा नहीं छोड़ती है। पत्नी कहती है, 'यह मुई मेरी सौत है। इसकी निगाह तुम्हारे शरीर के साथ तुम्हारी जेब पर भी रहती है।'

मैं अकसर यह महसूस करता हूं कि मेरी जेब में रखा हुआ पर्स भी जरूरत से ज्यादा दुबला हो चुका है। महंगाई डायन के प्रकोप के चलते 'चंद क्वॉइन' ही शेष बचे हुए हैं। गनीमत है कि वह पूरी तरह खाली नहीं हुआ है। शायद इसी दुबले पर्स पर महंगाई डाका डालने पर उतारू है। जिसके पास धन नहीं है, उसको न चोरी का डर सताता है और न रहजनी का। उसे एकमात्र डर सताता है तो महंगाई का।

मेरा प्रतिदिन महंगाई से इसी तरह मिलना होता रहा तो एक दिन इस गरीब की जान ही निकल जाएगी। आप जानते हैं कि गरीब की जान उसकी हलक में अटकी होती है। यह उस चिड़िया की तरह होती है, जिसे जब तक दाना-पानी मिलता रहता है, चहकती रहती है, जिस दिन मिलना बंद हो गया, फुर्र से उड़ जाती है। लोग यूं ही प्राण को पखेरू नहीं कहते हैं।

मैं इस नामाकूल महंगाई से कितना भी बचना चाहता हूं, लेकिन वह है कि हाथ धोकर मेरे गले पड़ती जा रही है। आज महंगाई फिर एक बार मुझसे मिलने आई है। वह आवश्यकता से अधिक मोटी दिख रही है। पिछली बार जब उससे मिलना हुआ था, तब भी वह मोटी ही थी, लेकिन इस बार उसके शरीर की चर्बी पर एक और परत चढ़ चुकी है। वैसे भी जो प्रतिदिन दूसरों की जेब पर डाका डालता हो, उसका मोटा हो जाना अचरज की बात नहीं है। मैं अपने आस-पास के ऐसे तमाम लोगों को जानता हूं, जो दूसरों को लूटते रहते हैं और मोटे हो जाते हैं। महंगाई भी पुष्ट हो रही है। वह मुझसे कहने लग गई, 'तुम मेरे नाम का रोना रोते रहते हो, मैंने सोचा आज एक बार और मिल लेती हूं! कहो, कैसे मिजाज हैं?' मैंने कहा, 'मिजाज की छोड़ो। तुमने हमें कहीं का नहीं छोड़ा है। तुम जिस अनुपात में मोटी होती चली जा रही हो, हम उसी अनुपात में दुबले हो रहे हैं। उधर तुम्हारी खुराक बढ़ती जा रही है, इधर हम अपने को किसी दिहाड़ी मजदूर की पगार जैसा बेबस पाते हैं।'

महंगाई जैसे आज विश्व हास्य दिवस मनाने के मूड में थी। वह पहले खूब हंसी, फिर मुझे छेड़ती हुई बोली, 'देख रही हूं। तुम्हारे पांवों में बेबसी के घुंघरू बंधे हुए है, फिर भी तुम ठुमक रहे हो। तुम जैसे बकरे को कहां पता है कि कल मैं तुमको किस भारी-भरकम रूप में मिलने वाली हूं!' *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

विडंबनाओं पर कटाक्ष

आज के बहुरूपिए समय में तमाम तरह की विडंबनाओं और विसंगतियों के संग जीने के लिए हम सब इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि किसी भी प्रकार के विद्रूप में असहज महसूस नहीं करते हैं। लेकिन एक व्यंग्यकार की सजग दृष्टि न केवल जीवन और व्यवस्था में धंसे विद्रूप को इंगित करती है, उस पर कटाक्ष भी करती है। सुपरिचित व्यंग्यकार मुरली मनोहर श्रीवास्तव के ऐसे ही चुने हुए 65 व्यंग्यों का संग्रह 'डेढ़ इंच मुसकान वाले लोग' हाल में छपकर आया है। इनमें कहीं वे नेशनल कैरेक्टर से लेकर, आटा से ज्यादा डाटा की चिंता करते नजर आते हैं, तो कहीं चुटकी लेते हुए मीडिया का महिमा मंडन करते दिखते हैं। 'ऑफिस रस' शीर्षक व्यंग्य में वह लिखते हैं, 'जिसे एक बार ऑफिस रस की लत लग गई, वह इसकी प्रॉपर डोज के बिना रह ही नहीं पाता। वह कहीं भी रहे, किसी भी हाल में पड़ा हो, इस रस की प्राप्ति के लिए छटपटाता रहता है।' हर खास-ओ-आम की जिंदगी में आज की तारीख में इंटरनेट डाटा का क्या महत्व हो चुका है, इस बारे में व्यंग्यकार की टिप्पणी ध्यान देने योग्य है। 'आटा और डाटा' शीर्षक व्यंग्य में वह कहते हैं, 'कई बार लगता है कि आटा न भी मिले तो चलेगा पर डाटा खत्म हो गया तो जीकर क्या करेंगे? लड़ाई यह है कि आटा जन-जन तक पहुंचा कि डाटा?' *

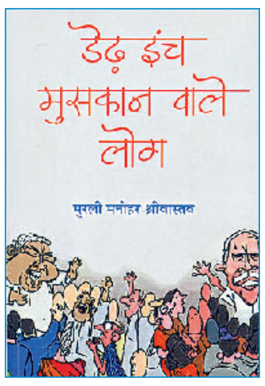

पुस्तक: डेढ़ इंच मुसकान वाले लोग (व्यंग्य संग्रह), **लेखक:** मुरली मनोहर श्रीवास्तव, **मूल्य:** 400 रुपए, **प्रकाशक:** विद्या विहार, नई दिल्ली

सीजनल टूरिज्म / समीर चौधरी

हर नेचर लवर टूरिस्ट, मानसून में भीगी हरी-भरी पहाड़ी वादियों को करीब से निहारना चाहता है। हालांकि आमतौर पर इस सीजन को ट्रैकिंग के लिए सुटेबल नहीं माना जाता है। लेकिन कुछ ऑफबीट-सुरक्षित हिमालयी ट्रैकिंग स्पॉट्स पर जाकर आप अपनी इस चाहत को पूरा कर सकते हैं। ऐसे ही कुछ बेमिसाल ट्रैकिंग स्पॉट्स पर एक नजर।

मानसून में करिए फुल एंज्वॉय ये हिमालयन ट्रैकिंग स्पॉट्स

मोहक नजारा दिखाए मरखा घाटी, लद्दाख

जुलाई और सितंबर के मध्य में मरखा घाटी (17,060 फीट की ऊंचाई पर स्थित) की दूधिया सफेद नदियां, सुंदर लैंडस्केप और विशाल पहाड़ों की पृष्ठभूमि में हरी-भरी वादियां मन मोह लेती हैं। यहां से कांग यत्से पहाड़ का दिलकश नजारा भी दिखता है। यह ट्रैक लेह से आरंभ होता है और फिर जब आप ऊपर की तरफ बढ़ते हैं तो हेमिस नेशनल पार्क, सुदूर गांवों और आध्यात्मिक ताचा मठ से होते हुए यह सफर यादगार बनता चला जाता है। यहां ट्रैकिंग करते हुए आपको हिमालयन ब्लू शीप, हिमालयन ग्रिफ्फोन, स्नो लेपर्ड और पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों का दीदार करने का अवसर भी मिलता है। *

अनुभवी ट्रैकर्स के लिए परफेक्ट परांग ला ट्रैक, हिमाचल प्रदेश

परांग ला ट्रैक (18,400 फीट की ऊंचाई पर स्थित) अनुभवी ट्रैकर्स के लिए परफेक्ट माना जाता है, क्योंकि लद्दाख व स्पीति को जोड़ने वाला इसका पथरीला, तीखी ढलान वाला रूट थोड़ा चुनौतीपूर्ण हो सकता है। आप इस ट्रैक पर शुरुआत लेह के करजोक गांव से या स्पीति के चिचम/किब्बर गांव से कर सकते हैं। कठिन रास्तों के बावजूद आपको जादुई नजारे देखने को मिलेंगे। इस दौरान आप खिले हुए जंगली फूल, गहरी नीली त्सो मोरिरी झील के अलावा किआंग या तिब्बती जंगली गधों के झुंडों को भी कूदते-दौड़ते हुए देख सकते हैं। इसे विजिट करने का सबसे अच्छा समय जुलाई के मध्य से सितंबर की शुरुआत तक होता है। *

हिडन डायमंड दरमा घाटी ट्रैक, उत्तराखंड

उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में स्थित दरमा घाटी ट्रैक (14,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित) एक छुपा हुआ हीरा कहा जाता है, जो आपको आकर्षक गांवों, घने जंगलों, रोलिंग घास के मैदानों और ग्लेशियर से पोषित धाराओं से रूबरू कराता है। इन सबकी पृष्ठभूमि में होती हैं हिमालय की विशाल ऊंची चोटियां। जब मानसूनी बारिश इस लैंडस्केप को भिगो देती है, तो यह वादी हरियाली और जंगली फूलों की सुगंध से भर जाती है। रास्ते में आपको बर्फ से ढंके पहाड़ मिलेंगे। आप इस दौरान स्थानीय समुदायों की विशिष्ट संस्कृति और मेजबानी का भी आनंद ले सकते हैं। जून से सितंबर इस ट्रैक पर जाने के लिए सबसे अच्छा समय है। *

हसीन वादियों से समृद्ध पिन घाटी, हिमाचल प्रदेश

मानसून में ट्रैकिंग के लिए एक अन्य बेहतरीन ट्रैकिंग स्पॉट पिन घाटी (15,780 फीट की ऊंचाई पर स्थित) है। यहां हरे-भरे जंगलों, विशाल घास के मैदानों, पथरीले रास्तों, बर्फ से ढंके मैदानों और ठंडे रेगिस्तानों का फोटो-फ्रेंडली नजारा देखने को मिलता है। यह ट्रैकिंग मुध नामक गांव से आरंभ होती है। पूरी तरह बर्फ सं ढंकी झोपड़ियों की पृष्ठभूमि में मटर और जौ के खेत और तेज हवाओं के साथ झूमते पेड़-पौधे आपका मन मोह लेंगे। इस ट्रैकिंग के दौरान आप प्राकृतिक गर्म पानी के चश्मों के लिए विख्यात खीरगंगा पर रुक सकते हैं। पिन नेशनल पार्क के साथ गेचांग, का और थंगो जैसे स्थान देखना न भूलें। यहां जाने के लिए सबसे अच्छा समय जुलाई से मध्य सितंबर तक माना जाता है। *

वन्य-जीवन से दीदार कराता तोसामैदान ट्रैक, कश्मीर

इस मौसम में ट्रैकिंग की सोच रहे हैं तो तोसामैदान ट्रैक (12,460 फीट की ऊंचाई पर स्थित) आपकी बकट लिस्ट में अवश्य होना चाहिए। कश्मीर के गुलमर्ग में स्थित यह ट्रैक विशाल पीर पंजाल रेंज, अल्पाइन घास के मैदान, शंकुधारी और चीड़ के जंगलों, चमचमाती झीलों और बर्फ से ढंके पहाड़ों से होकर गुजरता है। इस मार्ग पर ट्रैकिंग के दौरान विभिन्न हिमालयी वन्य जीवों जैसे कस्तूरी हिरण, लेपर्ड और विभिन्न प्रजातियों की मुर्गियां आदि को देखने का मौका आपको मिलेगा। यहां ट्रैकिंग करने का सबसे अच्छा समय जुलाई से सितंबर तक का होता है। *

सेल्फ इंप्रूवमेंट / नरेंद्र कुमार

किसी भी प्रोफेशन में ग्रो करने के लिए लगातार सीखना और खुद को बेहतर बनाने की क्षमता का होना जरूरी है। ऐसा तभी हो सकता है, जब आपको अपनी कमियां पता हों। कमियां पता लगाने के लिए बॉस ही नहीं कुलीग्स, सीनियर्स का फीडबैक भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस बारे में आपको जरूर जानना चाहिए।

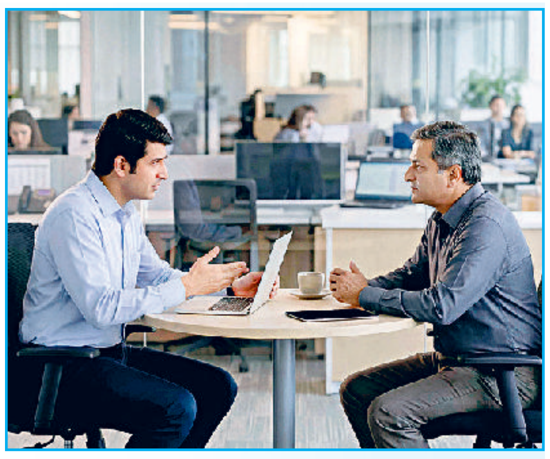

करियर ग्रोथ के लिए इंपॉर्टेंट है फीडबैक

आज के दौर में प्रोफेशनल दुनिया में कामयाबी के लिए सिर्फ मेहनत करना ही काफी नहीं है। कंपनियां अब अपने स्टाफ में ऐसे लोगों को चाहती हैं, जो हर समय सीखने को तैयार रहें। जो अपनी कमियों को पहचान सकें और किसी के द्वारा बताए जाने पर उसमें जरूरी सुधार करें। यही कारण है कि फीडबैक आज करियर ग्रोथ का एक महत्वपूर्ण जरिया बन चुका है। वास्तव में फीडबैक एक ऐसा आईना है, जिसमें हम अपनी प्रोफेशनल इमेज बहुत अच्छी तरह से देख सकते हैं। जो लोग इस आईने से डरते नहीं, वे लोग सचमुच इससे बहुत कुछ सीखते हैं।

क्या है फीडबैक: फीडबैक का मतलब केवल आपकी गलती बताया जाना नहीं होता। यह आपके प्रोफेशनल बिहेवियर, काम की प्रस्तुति और क्षमता का किया गया मूल्यांकन होता है, जिसमें सुझाव भी शामिल होता है। इसे अगर आप सकारात्मक तरीके से लेते हैं तो यह आपको बेहतर बनाने में मदद करता है और अगर आप इसे अपनी व्यक्तिगत अलोचना के तौर पर लेते हैं, तो इससे आपको नुकसान हो सकता है।

जरूरी है फीडबैक: डेढ़-दो दशक पहले नौकरियां आज के मुकाबले अपेक्षाकृत स्थिर हुआ करती थीं। लोग बीस-बीस, तीस-तीस साल तक एक ही कंपनी में गुजार देते थे। आज के समय में कंपनियां जरूरी नहीं है कि अगर किसी को अपने यहां रख लें तो उसे सालों-साल ढोती ही रहें। हां, आज भी दस पर्सेंट ऐसे कर्मचारी होते हैं, जो कई साल एक ही कंपनी में गुजार देते हैं। सवाल है, ऐसे थोड़े लोगों में क्या खूबी होती है कि आज भी कंपनियां इन थोड़े से लोगों को अपने साथ लंबे समय तक बनाए रखना चाहती हैं? दरअसल, आज कंपनियां उन्हीं कर्मचारियों को लंबे समय तक अपने साथ बनाए रखने में तरजीह देती हैं, जो अपनी प्रोफेशनल स्किल को लगातार बेहतर बनाने की कोशिश में रहते हैं और जब भी उन्हें कुछ सीखने का मौका मिलता है, जल्द से जल्द सीखने की कोशिश करते हैं। जो अपनी गलतियों में सुधार करने के लिए तैयार रहते हैं, समय और परिस्थितियों के मुताबिक काम के तौर-तरीके में जरूरी बदलाव करते हैं और टीम के साथ बेहतर तालमेल बनाए रखते हैं। वास्तव में ये क्वालिटीज फीडबैक के बेहतर उपयोग के नतीजे के रूप में सामने आती हैं।

फीडबैक बदलता है दिशा: कई बार लोगों को खुद अपनी कमजोरियों का अंदाजा नहीं हो पाता। ऐसे में अगर आप स्वयं को मिले फीडबैक के बाद अपने काम की गुणवत्ता के बारे में जरूरी समझकर, अपनी कमी को सुधारने की कोशिश करते हैं, तो यह कोशिश आपके लिए न केवल प्रमोशन बल्कि आगे चलकर टीम लीड करने की राह भी खोलेगी। यहां सीनियर्स को फीडबैक देने के तरीके के बारे में भी समझना जरूरी है। अकसर सीनियर्स गलत तरीके से या गुस्से में फीडबैक देते हैं। मसलन, किसी के काम में उन्हें कोई कमी नजर आती है, तो वह छूटते ही कह देते हैं, 'तुम हमेशा ही गलत काम करते हो।' इससे आपका कुलीग असहज हो जाता है। होना यह चाहिए कि किसी कुलीग या जूनियर को फीडबैक दें तो उसमें केवल कमी निकालने की बजाय उसके काम को और बेहतर बनाने के सुझाव पर फोकस होना चाहिए।

फीडबैक लेने का सही तरीका: फीडबैक देने के सही तरीके की तरह ही इसे लेने का तरीका भी सही होना चाहिए। सही तरीका यह है कि हम अपने काम में खामी निकालने वाले व्यक्ति की बात को ध्यान से सुनें, उसे बीच में कतई न टोकें। आप अपने लिए दिए गए महत्वपूर्ण सुझाव को लिख लें, ताकि बाद में जब अकेले में हों, तो उसे और बेहतर तरीके से समझ सकें। कोई भी फीडबैक मिलने पर आप सवाल पूछ सकते हैं, लेकिन यह सवाल रिएक्शन या ऑब्जेक्शन न लगे बल्कि आपको दी जा रही सलाह को और स्पष्ट किए जाने के संबंध में होना चाहिए या फिर बेहतर करने की इच्छा से संबंधित होना चाहिए। *

पुराने दौर से लेकर आज के समय में भी दुनिया भर के देशों में जन्मदिन के उत्सव को अलग-अलग तरीके से मनाया जाता रहा है। कुछ जगहों की परंपराएं तो बहुत ही अजब-अनोखी हैं। इनमें से कुछ दिलचस्प परंपराओं के बारे में यहां बता रहे हैं।

बर्थ-डे सेलिब्रेशन के अजब-अनोखे तरीके

बच्चों का 'किंडरफेस्ट' सेलिब्रेशन, जर्मनी

जन्मदिन पर 'पिन्याटा' फोड़ने की प्रथा, मैक्सिको

रोचक / नेहा जैन

बर्थ-डे का नाम सुनते ही सबसे पहले आपकी कल्पना में चारों तरफ सजे हुए रंग-बिरंगे गुब्बारे और मेज पर रखा सजा हुआ केक आता होगा। केक काटना आज जन्मदिन के उत्सव का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है। लेकिन केक के आविष्कार के पूर्व या उसके बाद भी दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में लोग किस तरह बर्थ-डे सेलिब्रेट करते थे, यह जानना बहुत दिलचस्प है।

प्राचीन यूनान (ग्रीस): प्राचीन काल में यूनान देश के लोग जन्मदिन के अवसर पर चंद्रमा की देवी आर्टेमिस के सम्मान में गोल आकार का शहद वाला केक बनाते थे, जो चांद का प्रतीक माना जाता था। केक पर जलती मोमबत्तियां चांद की चांदनी की तरह चमकती थीं। उनका मानना था कि मोमबत्तियों का धुआं उनकी प्रार्थनाओं को देवताओं तक पहुंचाता है।

रोमन सभ्यता: प्राचीन रोम में भी जन्मदिन के अवसर पर आटे, मेवों और शहद से बने केक या मीठी ब्रेड खिलाने का चलन था।

प्राचीन मिस्र (इजिप्ट): प्राचीन मिस्र के फराओ (राजाओं) के राज्याभिषेक के दिन को उनका 'जन्मदिन' माना जाता था, जिसे भव्य उत्सव के रूप में मनाते थे। इस अवसर पर विशेष तरह के कई पकवान बनाए जाते थे।

जर्मनी का किंडरफेस्ट: 18वीं शताब्दी में जर्मनी में बच्चों के जन्मदिन पर विशेष उत्सव मनाया जाता था, जिसे 'किंडरफेस्ट' कहा जाता था। यहां बच्चे की उम्र के अनुसार केक पर मोमबत्तियां लगाई जाती थीं और एक अतिरिक्त मोमबत्ती गुड लक के लिए रखी जाती थी।

ऐसे भी करते हैं बर्थ-डे सेलिब्रेट: आज भी दुनिया के अलग-अलग देशों में जन्मदिन को अनूठे तरीकों से मनाते हैं। इनमें से कुछ के बारे में यहां बता रहे हैं।

चीन: चीन में बच्चे के बर्थ-डे पर केक की जगह लंबी उम्र के प्रतीक के रूप में 'लॉन्जिविटी नूडल्स' खाए जाते हैं। मान्यता है कि नूडल्स जितने लंबे होंगे, उम्र उतनी ही लंबी होगी। हालांकि अब वहां केक के साथ भी बर्थ-डे सेलिब्रेशन लोकप्रिय है।

ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड: इन दोनों देशों में बर्थ-डे के अवसर पर फलों और क्रीम से सजी 'पावलोवा' केक बनाया और खाया जाता है।

जापान: यहां 3, 5 और 7 साल का होने पर बच्चों का जन्मदिन विशेष उत्सव के रूप में मनाते हैं, जहां वे पारंपरिक किमोनो पहनकर मंदिर जाते हैं। यह परंपरा शिकी-गो-सान कहलाती है।

मैक्सिको: यहां जन्मदिन की पार्टियों में 'पिन्याटा' फोड़ने का रिवाज है। यह कागज से बना बड़ा-सा खिलौना या गुब्बारा होता है। इसे कैंडी और छोटे-छोटे खिलौनों से भरा जाता है, फिर ऊंचाई पर लटका दिया जाता है। फोड़ने पर इससे निकलने वाले उपहारों को बच्चे बड़े उत्साह से लूटते हैं।

दक्षिण कोरिया: यहां जन्मदिन की सुबह 'मियेओक-गुक' (सीवीड सूप) पीना अनिवार्य माना जाता है। यह मां के प्रति सम्मान जताने का तरीका है, क्योंकि प्रसव के बाद मांएं इसे खाती हैं।

डेनमार्क: डेनमार्क में यदि किसी के घर के बाहर राष्ट्रीय ध्वज लहरा रहा हो तो इसका मतलब है कि घर में किसी का जन्मदिन है।

कनाडा: कनाडा में कुछ जगहों पर बर्थ-डे पर उस व्यक्ति की 'नोज ग्रीसिंग' की परंपरा है। माना जाता है कि नाक पर मक्खन लगाने से आने वाले साल में उसकी मुसीबतें फिसल कर दूर चली जाएंगी। कनाडा और अमेरिका में लड़कियों के 16वें जन्मदिन को बड़े उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसे स्वीट सिक्सटीन फेस्टिवल के रूप में मनाते हैं।

लैटिन अमेरिका: लैटिन अमेरिकी देशों में लड़कियों के 15वें जन्मदिन को विशेष धूमधाम से मनाया जाता है, जो उनके बचपन से वयस्कता की ओर बढ़ने का प्रतीक होता है। *

भारत में बर्थ-डे सेलिब्रेशन

अपने देश भारत में जन्मदिन पर मंदिर जाने, अपने से बड़ों का आशीर्वाद लेने और नए कपड़े पहनने आदि का रिवाज है। हालांकि महानगरों में आजकल बर्थ-डे पर केक काटना पॉपुलर हो गया है। लेकिन भारत में पारंपरिक रूप से इस अवसर पर खीर, मिठाई या हलवा खिलाया जाता है।

अनूठे बर्थ-डे केक्स

बर्थ-डे केक से जुड़ी कुछ बातें बहुत ही इंट्रेस्टिंग हैं।

भारत का सबसे भारी बर्थ-डे केक: भारत का सबसे भारी और लंबा बर्थडे केक 5.7 टन का था। यह विशाल केक जनवरी 2020 में भारतीय अभिनेता 'रॉकिंग स्टार यश' के जन्मदिन के अवसर पर बेंगलुरू, कर्नाटक में बनाया गया था। इसे बनाने में 22,500 अंडे, 1,800 किलोग्राम मैदा और 1,150 किलोग्राम चीनी का इस्तेमाल किया गया था। इस केक को 'श्री राम भवन स्वीट्स एंड बेकरी' के 20 कारीगरों ने 96 घंटों में तैयार किया था।

दुनिया का सबसे महंगा केक: दुनिया का सबसे महंगा केक ब्रिटिश डिजाइनर डेबी विंघम द्वारा वर्ष 2015 में बनाया गया था, जिसकी कीमत लगभग 75 मिलियन डॉलर (करीब 625 करोड़ रुपए) थी। यह केक एक फैशन रनवे की थीम पर आधारित था, जिसमें 4,000 से अधिक असली हीरे और कीमती रत्न जड़े गए थे।

दुनिया का सबसे बड़ा बर्थ-डे केक: यह रिकॉर्ड सन् 1990 में अमेरिका के अलबामा राज्य के फोर्ट पायने शहर के 100वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में बने केक के नाम है।

सिने-ट्रेंड / गौरव द्विवेदी

लेखकों की मेज से उपजा हिंदी सिनेमा का स्वर्णयुग

हिंदी सिनेमा का स्वर्णिम दौर केवल सितारों का नहीं, बल्कि लेखकों का भी स्वर्णिम समय था। साहित्य से निकली कहानियों और सशक्त पटकथाओं ने उस दौर की फिल्मों को कालजयी बनाया। आज जब बॉलीवुड सशक्त कहानी की कमी से जूझ रहा है, ऐसे में उसे फिर से साहित्य की ओर लौटने की दरकार है।

हिंदी सिनेमा का स्वर्णिम दौर केवल महान अभिनेताओं का दौर नहीं था, बल्कि महान लेखकों का भी दौर था। 1950, 60 और 70 के दशक में बॉलीवुड की सबसे बड़ी ताकत उसके लेखक हुआ करते थे। उस दौरान फिल्मों की नींव प्रायः साहित्य पर रखी जाती थी और पटकथा लेखक फिल्म निर्माण की प्रक्रिया के केंद्र में हुआ करते थे। यही कारण है कि उस दौर की अनेक फिल्में आज भी प्रासंगिक लगती हैं, जबकि तकनीकी रूप से कहीं अधिक उन्नत आज की कई फिल्में कुछ वर्षों में ही भुला दी जाती हैं।

साहित्य-सिनेमा चलते थे साथ-साथ: हिंदी फिल्मों के उस स्वर्ण युग के पीछे प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन और भारतीय साहित्यिक परंपरा का गहरा प्रभाव था। उर्दू और हिंदी साहित्य से जुड़े अनेक लेखक फिल्म उद्योग में आए। इनमें साहिर लुधियानवी, कैफी आजमी, ख्वाजा अहमद अब्बास, राजेंद्र सिंह बेदी, इस्मत चुगताई, कृशन चंदर, अली सरदार जाफरी, राही मासूम रजा, गुलशन नंदा, कमलेश्वर, मनोहर श्याम जोशी और शैलेंद्र के नाम प्रमुख थे। इन लेखकों ने फिल्मों को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहने दिया, बल्कि समाज, राजनीति और मानवीय संवेदनाओं का सशक्त दस्तावेज बना दिया।

साहित्य का विस्तार होती थीं फिल्मी पटकथा: उस दौर में पटकथा लेखन सिर्फ घटनाओं का क्रम नहीं था, बल्कि साहित्य का स्वाभाविक विस्तार हुआ करता था। ख्वाजा अहमद अब्बास ने 'आवारा', 'श्री 420', 'जागते रहो' और 'बॉबी' जैसी फिल्मों में सामाजिक यथार्थ को स्वर दिया। राजेंद्र सिंह बेदी ने 'देवदास', 'मधुमती' और 'अनुपमा' जैसी फिल्मों की पटकथाओं में साहित्यिक गहराई जोड़ी। राही मासूम रजा ने 'मैं तुलसी तेरे आंगन की', 'गोलमाल' और बाद में 'महाभारत' (सीरियल) से अपनी पहचान बनाई।

साहित्य से निकली कालजयी फिल्में: यह वह दौर था, जब फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी पर 'तीसरी कसम' बनी, आर. के. नारायण के उपन्यास पर 'गाइड' बनी, बिमल मित्र के उपन्यास पर 'साहिब बीवी और गुलाम' बनी। मन्नू भंडारी, अमृता प्रीतम, धर्मवीर भारती और प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों की रचनाएं भी फिल्मकारों को प्रेरित करती थीं। सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक और मृणाल सेन जैसे फिल्मकारों का प्रभाव भी हिंदी सिनेमा के गंभीर रचनाकारों पर दिखाई देता था।

पटकथा लेखन के स्टार सलीम-जावेद: 1970 के दशक में पटकथा लेखन को नई ऊंचाई सलीम-जावेद की जोड़ी ने दी। 'जंजीर', 'दीवार', 'शोले', 'त्रिशूल', 'डॉन' और 'शक्ति' जैसी फिल्मों ने साबित किया कि मजबूत कहानी और दमदार संवाद किसी भी फिल्म की सबसे बड़ी पूंजी होते हैं। यह संयोग नहीं है कि इन फिल्मों के संवाद आज भी लोगों की यादों में बसे हुए हैं।

बदलने लगीं प्राथमिकताएं: 1980 के दशक में हिंदी सिनेमा की दिशा बदलने लगी। वीडियो कैसेट संस्कृति, टेलीविजन का विस्तार और तेजी से बढ़ते व्यावसायिक दबावों के बीच कहानी की जगह फॉर्मूले ने लेनी शुरू कर दी। 'डिस्को डांसर' और 'हिम्मतवाला' जैसी फिल्मों की व्यावसायिक सफलता ने निर्माताओं को यह विश्वास दिलाया कि संगीत, सितारे और मनोरंजक मसाले, सशक्त कहानी की कमी पूरी कर सकते हैं।

नहीं है कहानियों की कोई कमी: वास्तव में बॉलीवुड की समस्या प्रतिभा की कमी नहीं, बल्कि साहित्य और समाज से दूरी है। हिंदी पट्टी में प्रेमचंद, रेणु, श्रीलाल शुक्ल, अमरकांत, काशीनाथ सिंह, उदय प्रकाश, चित्रा मुद्गल, गीतांजलि श्री, संजीव और नीलोत्पल मृणाल जैसे लेखकों का विशाल संसार मौजूद है। लोककथाओं, इतिहास, ग्रामीण भारत, छोटे शहरों, सामाजिक बदलावों और समकालीन भारत के असंख्य अनुभवों से भरी कहानियां आज भी लिखी जा रही हैं। जरूरत केवल उन्हें पर्दे पर लाने की इच्छा की है।

फिर से देना होगा कहानियों को महत्व: यदि बॉलीवुड को अपनी खोई हुई रचनात्मक ऊर्जा वापस हासिल करनी है तो उसे फिर से लेखकों की महत्ता को स्वीकारना होगा। आखिरकार 'मदर इंडिया', 'दो बीघा जमीन', 'गाइड', 'आनंद' जैसी फिल्मों को कैमरों ने नहीं, कहानियों ने अमर बनाया था। सिनेमा का भविष्य भी वहीं से निकलेगा जहां उसका स्वर्णिम अतीत जन्मा था यानी लेखकों की मेज से। *

(लेखक फिल्म नीति के जानकार हैं)

दक्षिण भारतीय फिल्मों में बरकरार कहानी का महत्व

दक्षिण भारतीय फिल्म उद्योगों ने कहानी की परंपरा को बनाए रखा। मलयालम सिनेमा में एम. टी. वासुदेवन नायर, पद्मराजन, लोहितदास और हाल के वर्षों में दिलीश पोथन तथा श्याम पुष्करण जैसे लेखकों-निर्देशकों ने साहित्य और समाज से जुड़ी कहानियों को जीवित रखा। तमिल सिनेमा में जयकांतन, सुजाता और बाद में वेट्रिमारन जैसे फिल्मकारों ने यथार्थवादी कथाओं की परंपरा को आगे बढ़ाया। इसी का परिणाम है कि 'दृश्यम', 'प्रेमम', 'कुंबलंगी नाइट्स', 'महाराजा', 'असुरन', 'जय भीम', '96', 'कांतारा', 'चार्ली 777' और 'पुष्पा' जैसी फिल्में अपनी स्थानीय संस्कृति में रची-बसी होने के बावजूद राष्ट्रीय और वैश्विक दर्शकों तक पहुंचती हैं। ये फिल्में दर्शाती हैं कि स्थानीयता ही वैश्विकता का रास्ता बन सकती है